Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024, R.N.I. No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

नई दिल्ली • वर्ष 25 • अंक 25 • 25 - 31 मार्च, 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 23-03-2024 • पेज 16 • ₹ 10 रुपये

अर्हत् उवाच

वुसिते विगयगिद्धी य,
आयाणं सारक्खए।

संयमी व्यक्ति धर्म में स्थित रहे। वह किसी भी इंद्रिय-विषय में आसक्त न बने और आत्मा का संरक्षण करे।

पाप बंध से बचने के लिए संयम के सुमेरू ने किया उत्प्रेरित

मोक्ष मार्ग में पाथेय के समान है सत्य वचन: आचार्यश्री महाश्रमण

गरूड़माची रिसोर्ट।
१७ मार्च, २०२४

जन-जन के उद्धारक परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी आज गरूड़माची रिसोर्ट पधारे। मंगल देशना प्रदान कराते हुए महातपस्वी ने फरमाया कि हमारी दुनिया में पाप भी चलता है और धर्म भी चलता है। आदमी व अन्य प्राणी कभी पाप में प्रवृत हो जाते हैं तो कभी वे धर्म की आराधना करने वाले भी बन जाते हैं।

पाप के अठारह प्रकार जैन तत्त्व विद्या में बताये गये हैं। ये अठारह- पाप की प्रवृत्तियां हैं जिनसे पाप कर्म का बन्ध होता है। तीन चीजें है- पापस्थान, पाप की प्रवृत्ति और पाप का बन्ध। अतीत, वर्तमान और भविष्य से जुड़ी ये चीजें हैं। हिंसा करना, झूठ बोलना आदि पाप हैं। झूठ बोलने वाले का लोग विश्वास नहीं करते। सत्य विश्वास का स्थान है। विपत्ति का नाश करने वाला भी सत्य वचन होता है। देवों के द्वारा भी सत्य वचन की आराधना की गयी है। मोक्ष के मार्ग में सत्य वचन पाथेय के समान है। सत्य कल्याण करने वाला, समृद्धि को पैदा करने वाला, सज्जनता की संजीवनी है। चोरी नहीं करना और झूठ नहीं बोलना ये ईमानदारी के दो आयाम हैं। हमें ईमानदारी के लिए ये दो प्रयास करने चाहिये। मन ललचाता है तो आदमी दूसरे की चीज चुरा सकता है। अनेक रूपों में चोरी हो सकती है। गृहस्थों का यह मनोभाव रहे कि अदत्तादान का त्याग हो। यह दुर्लभ मनुष्य जन्म हमें मिला है, इसमें ज्यादा से ज्यादा धर्म का कार्य करने का प्रयास करें, पाप बंध से बचने का प्रयास करें। साधुओं के वचन से आदमी पापों को छोड़ने का निर्णय कर धर्म के रास्ते पर आगे बढ़ने लग सकता है। संत तो स्वयं त्यागी होते हैं, उनकी वाणी के प्रभाव से आदमी की जीवन शैली में परिवर्तन आ सकता है, वह सन्मार्ग पर चलने का प्रयास कर सकता है।

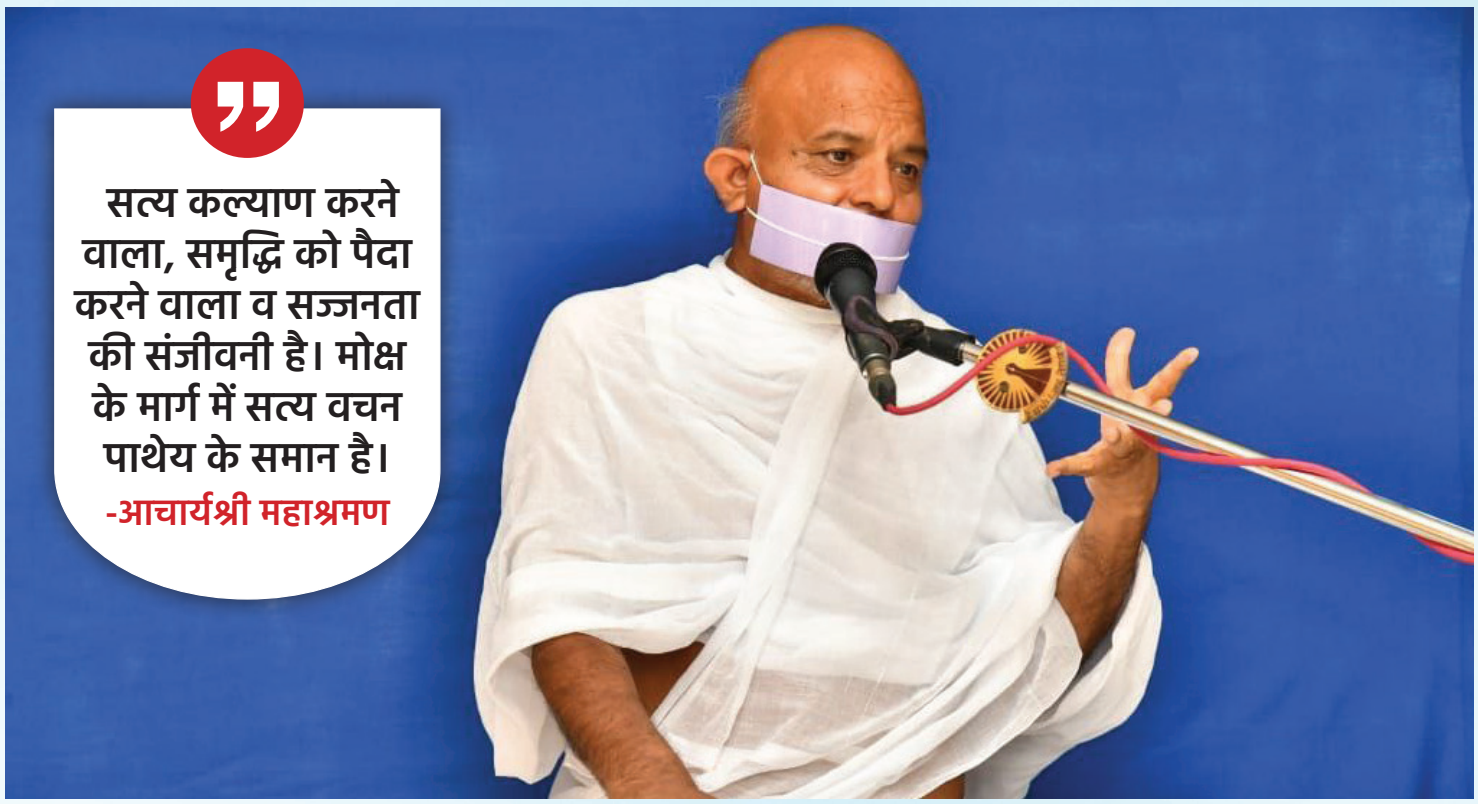

> सत्य कल्याण करने वाला, समृद्धि को पैदा करने वाला व सज्जनता की संजीवनी है। मोक्ष के मार्ग में सत्य वचन पाथेय के समान है।
> -आचार्यश्री महाश्रमण

आचार, संस्कार, व्यवहार और विचार में पुष्ट रहे अहिंसा : आचार्यश्री महाश्रमण

तामिनी घाट।
१६ मार्च, २०२४

महान् यायावर आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः सांसवाड़ी से विहार कर तामिनी घाट पधारे। मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए महामनीषी ने फरमाया कि अहिंसा काफी व्यापक और प्रिय शब्द है। धर्म शास्त्रों में अहिंसा का बहुत महत्व बताया गया है।

जीवन में हिंसा से विरत रहना चाहिए। शास्त्रों में कहा गया है कि जो ज्ञानी आदमी है, जिसने अनेक ग्रंथों का ज्ञान किया है, उसके ज्ञानी बनने का सार यह होना चाहिये कि वह किसी की हिंसा न करे। अहिंसा के लिए समता भाव भी अपेक्षित है। समता कारण और अहिंसा कार्य बन सकती है।

गृहस्थ जीवन में रहने वाले भी अहिंसक चेतना के विकास का प्रयास करें। साधु के तो हर क्रिया में अहिंसा होती है। आत्मा ही हिंसा है और आत्मा ही अहिंसा है, यह निश्चय नय की बात है। जो अप्रमत्त है वह अहिंसक है, जो प्रमत्त है वह हिंसक होता है। हिंसा-अहिंसा का मूल भीतर से संबंध है। वीतराग साधु चल रहा है, चलते-चलते कोई जीव मर गया तो हिंसा तो हो गयी पर साधु उस हिंसा के पाप का भागीदार नहीं बनता, क्योंकि साधु के भीतर में तो अहिंसा है। भीतर में अहिंसा है तो व्यक्ति बाहर में जानबूझ कर हिंसा कर ही नहीं पायेगा। द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा एक महत्वपूर्ण विषय बन जाता है। साधु के द्रव्य हिंसा हो भी जाये तो भी वह भाव हिंसा नहीं होती है। एक शिकारी शिकार के लिए बाण छोड़ता है पर शिकार नहीं हो पाता। इस स्थिति में भले वह द्रव्य हिंसा न हो पर भाव हिंसा अवश्य है। गृहस्थ भी ज्यादा से ज्यादा अहिंसा पूर्ण व्यवहार करने का प्रयत्न करे यह कल्याणकारी बात है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

सत्संगत है मोक्ष तक पहुंचाने में निमित्त : आचार्यश्री महाश्रमण

साधु के दर्शन मिल जाए तो आदमी की दिशा और दशा बदल सकती है।

सांसवाड़ी।
१५ मार्च, २०२४

संयम के सुमेरू आचार्यश्री महाश्रमणजी निजामपुर से विहार कर सांसवाड़ी पधारे। पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि आदमी संपर्क करता है, दूसरों के साथ रहता है, संगति करता है।

संगति दो प्रकार की हो सकती है- सुसंगति और कुसंगति। सुसंगति को हम सत्संगत भी कह सकते हैं। सत्संगत अर्थात् साधुओं की, सज्जन व्यक्तियों की संगति। कुसंगति अर्थात् ऐसे व्यक्तियों के संपर्क में रहना जिनसे खराब संस्कार मिलते हों। संगति व्यक्तियों के साथ होती है, तो संगति साहित्य के साथ भी होती है। संगति का हमारे मन पर प्रभाव पड़ सकता है।

देखने या सुनने से उसका असर भीतर तक हो सकता है। श्रद्धेय की फोटो या मूर्ति सामने आ जाये तो उनके प्रति श्रद्धा के भाव आ सकते हैं।

बुरा देखो मत, बुरा सुनो मत, बुरा बोलो मत, बुरा सोचो मत और बुरा करो मत। संगति हम पर प्रभाव छोड़ने वाली

हो सकती है, इसलिए हमेशा अच्छी संगत करें, अच्छी बात करें। साधुओं की संगति तो बहुत अच्छी होती है।

कहा गया है-

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुनि आध।
तुलसी संगत साध की, हरे कोटि अपराध।।

साधु तो जंगम तीर्थ है, उनके तो दर्शन ही अपने आप में पुण्य है। जो साधु त्यागी हैं, अहिंसक हैं, उनके दर्शन मात्र से भीतर के पाप झड़ सकते है। साधु के दर्शन मिल जाए तो आदमी की दिशा और दशा बदल सकती है। साधुओं की उपासना करने से सुनने को कोई बात मिल सकती है। सुनने से ज्ञान, विज्ञान, प्रत्याख्यान आदि गुण आ सकते हैं। सत्संगत मोक्ष तक पहुंचाने की निमित्त बन सकती है। अतः अच्छी संगति, त्यागी-संयमी साधु की संगति करने का प्रयास करें।

तेरापंथ टाइम्स ऑनलाईन पढ़ने के लिए terapanthtimes.com

प्रथम पृष्ठ का शेष

आचार, संस्कार, व्यवहार और विचार में पुष्ट रहे अहिंसा : आचार्यश्री महाश्रमण

गृहस्थ मांसाहार न करे। जितना संभव हो सके जमीकंद के भक्षण से भी बचे। किसी प्राणी की संकल्पपूर्वक हिंसा न करे, कटु वचन बोलने से बचें, यह भी अहिंसा की चेतना है। सभी जीवों के प्रति दया का, मैत्री का भाव रहे।

गृहस्थों के आवश्यक हिंसा तो होती है, पर संकल्पजा हिंसा से गृहस्थ बचने का प्रयास करें। गृहस्थों का जीवन अहिंसक जीवन शैली वाला बने। जिस व्यवसाय में हिंसा ज्यादा हो उस व्यापार से बचने का प्रयास करें। अहिंसा परम धर्म है। हमारे आचार, संस्कार, व्यवहार और विचार में अहिंसा पुष्ट बनी रहे।

(पृष्ठ १२का शेष)

समस्याओं की अवांछनीय वर्षा से सुरक्षा कर सकता है अणुव्रत का छत्र : आचार्य श्री महाश्रमण: आचार्यश्री महाश्रमण

अणुव्रत की उपयोगिता पहले भी थी, वर्तमान में भी है और भविष्य में भी रहेगी। जैसे परम पूज्य आचार्य प्रवर के सान्निध्य में अणुव्रत अमृत महोत्सव मनाया गया वैसे ही आचार्य प्रवर के सान्निध्य में शताब्दी महोत्सव भी मनाया जाए।

मुख्यमुनि महावीरकुमारजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि गुरुदेव तुलसी ने अपनी दूरदर्शिता से एक ऐसा दर्शन दिया जिसके माध्यम से व्यक्ति के चरित्र का उत्थान हो सकता है, नैतिकता की प्रतिष्ठापना हो सकती है और अहिंसक विश्व का निर्माण किया जा सकता है। गुरुदेव श्री तुलसी ने अणुव्रत को जन- जन तक पहुंचाया। सैंकड़ों कार्यकर्ताओं और साधु साध्वियों ने अपना योगदान दिया।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ द्वारा प्रवर्तित जीवन विज्ञान और प्रेक्षा ध्यान से अणुव्रत और सबल बन गया। आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अपनी दूरदर्शिता से अणुव्रत की अलग-अलग संस्थाओं का एकीकरण कर सारे आयामों को एक ही संस्था के अंतर्गत लाकर नया प्राण भर दिया और ७५वें वर्ष में अणुव्रत यात्रा घोषित कर अणुव्रत के महत्व को और वृद्धिंगत कर दिया।

साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने अपने वक्तव्य में कहा- जैन आगमों में तीन प्रकार के व्यक्तित्वों का उल्लेख मिलता हैः आत्मानुकम्पी, परानुकंपी, उभयानुकम्पी।

गुरुदेव तुलसी उभयानुकम्पी व्यक्तित्व के धारक थे। उभयानुकम्पी व्यक्तित्व अपने निर्माण के साथ-साथ दूसरों के निर्माण, उत्थान, विकास का चिंतन करता है।

आचार्य तुलसी ने अपनी अमाप्य शक्ति से अनेक व्यक्तित्वों का निर्माण तो किया ही, अनेकों अवदान भी दिए जिनके माध्यम से मानव जाति का उत्थान हो सके। उनमें से एक है- अणुव्रत। व्रत हमारे जीवन का सुरक्षा कवच है। जहां व्रत नहीं होते वहां बेईमानी, भ्रष्टाचार, अनाचार आदि दुष्प्रवृत्तियां बढ़ जाती हैं और समाज रुग्ण, अस्वस्थ और कमजोर बन जाता है। अणुव्रत की आचार संहिता, मानव में मानवीयता एवं नैतिकता के गुणों को विकसित करती है।

अणुविभा परामर्शक, न्यायाधीश गौतम चोरड़िया, अणुविभा के प्रबंध न्यासी तेजकरण सुराणा, अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत अमृत महोत्सव के संयोजक संजय जैन ने किया।

शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी की पुण्यतिथि पर श्रद्धार्पण

● साध्वी सुनन्दाश्री ●

शासन माता की गाथा, गाता गण सारा है।
स्मृतियों के दर्पण में, उभरा चित्र तुम्हारा है।

गुण गरिमा से महिमा मंडित, शोभित तेरा जीवन था।
गंगाजल से भी निर्मल, उज्ज्वल, पावन तेरा मन था।
चरणों में हम रहे, यही सौभाग्य हमारा है।।

समय-समय अनमोल अनूठे, बोधपाठ देती रहती।
बढ़े सजगता, क्षण-क्षण का उपयोग करो हमसे कहती।
शिक्षामृत की बूंदे ही, अब सबल सहारा है।

साम्य योग की सफल साधिका, श्रुताराधिका नमन तुम्हें।
श्रम सेवा संयुत गुरुवर, आज्ञानुराधिका नमन तुम्हें।
कर में ले छैनी कितनों का रूप निखारा है।

लयः अणुव्रत है सोया संसार

❖ काम को जीतना महाकठिन कार्य तो हो सकता है, पर असंभव नहीं। लक्ष्य बनाओ। काम के साथ युद्ध शुरू करो। कभी अकाम बन जाओगे।

-आचार्य श्री महाश्रमण

'शासनश्री' साध्वीश्री सोमलता जी के प्रति चारित्रात्माओं के उद्‌गार

संघ के लिए जितना करें उतना कम है

● साध्वी शांतिलता ●

'शासनश्री' साध्वी सोमलता जी तेरापंथ धर्म संघ की एक प्रबुद्ध, विलक्षण, वक्ता और लेखिका थी। आपकी वाणी में मिठास, चेहरे पर चुम्बकीय आकर्षण व दूसरों से कार्य करवाने की अद्भुत कला थी। स्वास्थ्य की अनुकूलता न होने पर भी आपने लम्बी-लम्बी यात्रायें की। आपकी कार्य शैली अद्भुत थी। दूसरों का ऐसा उत्साह बढ़ाते कि वह काम करने के लिए तत्पर हो जाता। आसाम बिहार की यात्रा में हम दो सिंघाड़े साध्वी सोमलता जी ठाणा-५ और साध्वी मधुस्मिताजी ठाणा-५ थे। लम्बे-लम्बे विहार और आहार-पानी में पूरी ऊनोदरी। फिर भी साध्वी सोमलताजी ने ऐसी व्यवस्था की कि किसी को अंगुली उठानी नहीं पड़ी। यह थी उनकी कार्यकुशलता।

आपका प्रवचन हृदयस्पर्शी, आकर्षक व प्रेरक होता। ऐसे-ऐसे लोग जो कभी प्रवचन श्रवण नहीं करते वे भी आपके प्रवचन में दौड़े-दौड़े आते। जोबनेर में जब रात्रि में अंजना सती का प्रवचन होता तो आस-पास के क्षेत्रों से बसें की बसें बाती। ऐसा लगता मानो कोई पिक्चर का शो लगा हो। सिद्धपुर में श्रद्धा के सिर्फ दो घर थे लेकिन रात्रिकालीन प्रवचन में लम्बी संख्या में जैन-जैनेतर लोग उपस्थित होते।

कलकत्ता के प्रथम प्रवचन से लोग इतने आकर्षित हुए कि मित्र परिषद् साध्वीश्री जी के प्रवचन टी.वी. में प्रसारित करने को आतुर थीं। उनके प्रवचनों से जैन-जैनेत्तर ही नहीं सम्पूर्ण कलकत्ता लाभान्वित हुआ। दूसरे वर्ष भी जब यही क्रम हुआ तो साध्वीश्री ने उन्हें सुझाव दिया कि गुरुदेव का प्रवचन प्रसारित किया जाये तो अच्छा रहेगा। मित्र परिषद् ने यह बीड़ा हाथों में लिया और गुरुदेव तुलसी का प्रवचन संस्कार चैनल में प्रसारित करने लगे। तब से लेकर आज तक यह क्रम अनवरत चल रहा है।

कलकत्ता में एक ओर प्रभावक कार्य हुआ। कलकत्ता बड़े बाजार के महासभा में साध्वीश्री का चातुर्मास हुआ। उस समय तेरापंथ स्कूल का लम्बे अरसे से झगड़ा चल रहा था। गुरुदेव तुलसी के आशीर्वाद एवं साध्वीश्रीजी की विशेष प्रेरणा से वह झगड़ा सलट गया। यह एक विशेष उपलब्धि ही माननी चाहिए।

आपके गीत अत्यन्त मार्मिक व हृदय स्पर्शी होते। ऐसा लगता देवी सरस्वती आपके कंठों में विराजमान थी। सिलीगुड़ी में आपके जन्मदिवस के अवसर पर श्रद्धानिष्ठ श्रावक प्रताप बैद ने साध्वीश्री से एक यादगार गीत की रचना करने का निवेदन किया। साध्वीश्री को वह बात ऐसी जची कि शारीरिक अस्वस्थता होते हुए भी आपने गीत बनाने का निश्चय कर लिया और मुझे फरमाया कि कॉपी पेन लाओ और जो मैं कहूं उसे नोट करो। सोए-सोए आप गीत की पंक्तियां बनाते गए और मैं लिखती गई।

"प्रातः उठ परमेष्ठी वंदन, करूं सदा निष्काम।
शांति रहेगी आठों याम।।"

यह गीत अमर बन गया। आज भी अनेकों श्रावक-श्राविकाओं के मुख पर यह गीत मुखरित हो रहा है। शासनमाता साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभाजी ने भी फरमाया कि कीर्ति जी तुम्हारे अग्रगामी का गीत प्रसिद्ध हो गया।

गुवाहाटी चातुर्मास में दो गुटों में आपसी विवाद था। एक गुट के लोगों ने साध्वी श्री को कहा कि यदि आप दूसरे गुट की बात मानना बंद कर दें तो हम आपको साध्वी प्रमुखा का पद भी दिला सकते हैं। साध्वीश्री ऐसे प्रलोभनों से काफी दूर थे। आपने निडरता के साथ कहा- मैं किसी दल की ओर झुकने वाली नहीं हूं सिर्फ सत्य की ओर झुकूंगी। यह थी उनकी निडरता।

साध्वीश्री हमें निरन्तर प्रेरणा देते कि संघ से हमें बहुत कुछ मिला है। अतः संघ का कर्जा हमारे सिर पर है। हम संघ के लिए जितना करें उतना ही कम है। मैंने देखा जब-जब भी गुरु दर्शन करते, चाहे यात्रा छोटी हो या बड़ी, कभी भी खाली हाथ नहीं जाते। दो-तीन रजोहरण, मुंहपत्तियां, डोरियां, सांकली आदि विभिन्न उपकरण भेंट में ले जाते। यह थी उनकी संघ के प्रति ऊऋणता।

आपके मन की एक तमन्ना थी कि मेरी सहवर्ती साध्वी को मैं अग्रगामी के रूप में देखूं। भावना को आकार मिला और साध्वीश्री कीर्तिलता जी जो १९ वर्षों तक आपके संग रहे उन्हें आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने अग्रगामी बना कर बहिर्विहार में भेजा।

आपके सान्निध्य में रहकर हमने खूब यात्रा की, खूब विकास किया, खूब काम किया। नये-नये घर बनायें। हमने जो कुछ भी सीखा है वह साध्वीश्री की ही देन है। साध्वीश्री छोटी अवस्था में ही कैंसर जैसी असाध्य बीमारी से जूझे। संघ में कैंसर का सबसे पहला ऑपरेशन आपका ही हुआ। आपकी सहनशीलता बेजोड़ थी। अंतिम समय तक बीमारियों से जूझते रहे। फिर भी निराशा का कुहासा आपको कभी सता नहीं पाया। अंतिम समय में संथारा कर जीवन का कल्याण किया। यह थी आपकी जागरूकता।

विवेक सम्पन्न साध्वी सोमलताजी

● साध्वी जागृतप्रभा ●

मन को झकझोरने वाले, दिल को रोमांचित करने वाले, अन्तश्चेतना की सुषुप्ति को हरने वाले वो पल आत्म-जागरण के पल थे। सचमुच, आपकी साधना-आराधना, आपका त्याग, सहजता, सरलता, पापभीरूता, आत्मरमणता नमनीय व स्तुत्य थी और रहेगी।

मैं लगभग १३ वर्षों से आपके पास हूं। इस काल में आपने मुझे अनेक बार संकोच वृत्ति को छोड़कर उपदेश देने के लिए प्रेरित किया। कई बार आप मेरे लिए छः विगय का प्रत्याख्यान कर लेती। यह थी सहयोगी साध्वियों के विकास के प्रति आपकी शुद्ध भावना।

शुभ भावों में निरन्तर आत्मा में तल्लीन रहने वाली 'शासनश्री' साध्वी सोमलता जी का व्यक्तित्व निराला था। वात्सल्य भाव, आत्मीयता अविस्मरणीय है। ऐसी महान् साध्वी के बारे में अपने विचारों को लिखने में असमर्थता प्रकट कर रही हूं।

मैंने अपनी आंखों से देखा- देह देवालय से देव विदा हो गया। आपके आदर्श जीवित रहेंगे। आपका जीवन अमृत से भरे पात्र की तरह चित्त समाधि के रस से भरा था। आपश्री के घट में दया थी, आप विवेक सम्पन्न थे। आपकी जागरूकता ने ही आपको प्रत्याख्यान की दिशा की ओर गतिमान किया।

अंतिम समय में चौविहार तेले का प्रत्याख्यान स्वयं किया और साथ ही संकेत भी दे दिया कि मैंने जीवन भर के आहार-पानी का यानि चौविहार त्याग कर दिया है। आप मुझे आलोयणा करा के शुद्ध करें। यह वही कह सकता है जिसने मौत का सामना करने की हिम्मत बटोर ली है। आपने असहनीय वेदना में मौत का अभिनंदन किया और मौत उनके लिए मोक्ष का द्वार बन गई। ऐसी शुद्धात्मा को श्रद्धा से नमन करती हूं। कामना करती हूं कि आप अतिशीघ्र ही भव सागर से तरकर सिद्धालय में वास करें।

आपका मृत्यु महोत्सव बना महान। आपको याद रखेगा सारा जहान।।

एक विदुषी, चिन्तनशील, गम्भीर साध्वी की कमी हो गई

● साध्वी काव्यलता ●

'शासनश्री' साध्वी सोमलताजी हमारे धर्मसंघ की विदुषी, चिन्तनशील गम्भीर, गुरुभक्ति में भीगी साध्वी थी। आप भाग्यशालिनी थी कि आचार्य तुलसी के शासनकाल में साध्वी प्रमुखा लाडांजी के कर कमलों से आपकी दीक्षा हुई।

साध्वी प्रमुखा लाडांजी की सन्निधि में रहकर आपने अपने जीवन को सदा सरसब्ज बनाया। आपश्री कुशल गायिका, सफल गीतकार, प्रखर प्रवचनकार, कुशल लेखिका थी। आपने देश-विदेशों की यात्रा कर धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना की। आप स्वयं तो एक संस्कारी गुण सम्पन्न साध्वी थी, आपने अपनी सहवर्ती साध्वियों को भी अच्छे संस्कार दिये। साध्वी शकुन्तलाजी, संचितयशाजी, जागृतयशाजी, रक्षितयशाजी ने साध्वीश्री जी की खूब सेवा की, सदा अनुकूल रही।

हमें साध्वी सोमलताजी पर गौरव है, जब कभी गीत बनाने का काम पड़ता आप तत्काल बनाकर देती। इस बार नन्दनवन में जब मैंने अठाई की, उन्होंने मेरा खूब लाड रखा, कई गीत बनाकर मुझे सुनाए। ऐसी मृदभाषी साध्वीश्री के जाने से हमारे संघ में एक अच्छी साध्वी की कमी हुई है। आप परम सौभाग्यशालिनी थी कि आप को इस बार चातुर्मास में गुरु सन्निधि प्राप्त हुई एवं बाद में मुनिश्री के दर्शन भी हो गये। साध्वी सोमलताजी की आत्मा शीघ्र सिद्धत्व अवस्था को प्राप्त करे यही मंगल कामना।

'शासनश्री' साध्वीश्री सोमलता जी के प्रति चारित्रात्माओं के उद्‌गार

समता की जलती मशाल – मेरे रोल मॉडल : साध्वी सोमलताजी

● साध्वी रक्षितयशा ●

संस्कारों का सिंचन देकर, संयम जीवन सदा संवारा।
भूल नहीं सकती इहभव परभव, शासनश्री उपकार तुम्हारा।।

दशवैकालिक सूत्र में कहा गया– ''सोही उज्जुयभूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई'' अर्थात् जो ऋजुभूत होता है उसी में धर्म ठहरता है। इस आर्ष वाणी को सार्थक करने वाली तेरापंथ धर्म संघ की प्रतिष्ठित व सरलमना आत्मा 'शासनश्री' साध्वी सोमलताजी का आत्मबल, संकल्पबल, धृतिबल व उच्च मनोबल अनुकरणीय तथा प्रशंसनीय है। ऐसी पुण्यात्मा, चारित्रात्मा, विरल आत्मा जिन्होंने अपनी प्रखर प्रेरणा कुशल मार्गदर्शन के द्वारा मेरे जीवन को संवारा, मेरे भीतर सुदृढ़ संस्कारों का सिंचन किया। शासनश्रीजी की वत्सलता की छोटी सी नजीर तथा उनके गुणों की महक को यहां प्रस्तुत कर रही हूं।

वात्सल्य बरसाते नयन – शासनश्रीजी का जीवन करूणा का बहता दरिया था। नयनों में झलकता वात्सल्य तथा मधुरभाषी वक्तव्य आबाल, वृद्ध सभी को चुंबक की तरह खींच लेता। प्रेमपूर्ण तथा आत्मीय व्यवहार से हर कोई इंसान उनका अपना बन जाता था।

प्रसन्नता से लबरेज– आचार्यश्री महाश्रमण जी फरमाते हैं– प्रसन्नता तथा विनम्रता से चेहरे का सौंदर्य बढ़ता है। शासनश्रीजी इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। भयंकर वेदना में भी उनके चेहरे की प्रसन्नता सदाबहार रहती। उनकी प्रसन्नता से उनका आभामंडल भी पवित्र तथा पॉजिटिव रहता। साध्वीश्री का चेहरा अंतिम सांस तक गुलाब के फूल की तरह चमक रहा था।

प्रमोद भावना– साधु हो या साध्वी, छोटा हो या बड़ा वह किसी में भी गुणों को देखती, उनके गुणों का गुणगान कर उनके उत्साह को शतगुणित कर देती थी। प्रमोद भावना से वह चित्त में आह्लाद की अनुभूति करती तथा कहती थी कि जब भी मैं गुणीजनों का गुणगान करती हूं मेरी जिह्वा धन्य हो जाती है।

उपशांत कषाय– शासनश्रीजी के कषाय सहज शांत थे। आप कभी गुस्सा नहीं करती, कड़े शब्द नहीं फरमाती। आप कहती थी कि हमेशा शांति से रहो, प्रत्येक कार्य सहजता तथा शांति से करो।

विलक्षण गुरु भक्ति– शासनश्रीजी की गुरु भक्ति विलक्षण तथा विचक्षण थी। गुरुदेव द्वारा प्रदत्त मंत्र ''५१ बार नमोत्थुणं' का जप उनके लिए संजीवनी बूटी बन गया था। गुरु मंत्र का जप किए बिना वह पानी भी मुंह में नहीं लेती। उन्हें अंतिम चतुर्मास में गुरुकुलवास में रहने का दुर्लभ योग प्राप्त हुआ। यद्यपि स्वास्थ्य की दृष्टि से बीच में ही विहार करना पड़ा। साध्वीश्रीजी को गुरुदेव के मंगलपाठ पर अद्भुत श्रद्धा थी, उनको विश्वास था कि मैं स्वस्थ हो जाऊंगी लेकिन आयुष्य कर्म के आगे सभी को झुकना ही पड़ता है। जब उनका बैठना, चलना, बोलना सब कम होता गया तो वो सोते–सोते ही पैन डायरी अपने पास रखती। उन्होंने अपने हाथों से लिखकर गुरुदेव तथा संघ के प्रति भक्ति रस से भरे दो गीतों का निर्माण किया और कहा जब भी गुरुदेव के दर्शन करो मेरे भावों की अभिव्यक्ति दे देना। वह अपने आपको धन्य मानती और कहती कि मुझ पर गुरु की अनंत कृपा है, मुझ पर गुरुदेव का बहुत उपकार है जिसे मैं जन्मों–जन्मों तक नहीं भूल सकती हूं।

गुरुदेव ने महती कृपा कर अंतिम संदेश में लिखा था– साध्वी सोमलता जी वर्तमान में धर्मसंघ की विरल साध्वी है। गुरु के मुखारविंद से निकले इन वचनों से साध्वीश्री का संयमी जीवन धन्य हो गया, निहाल हो गया। हम सभी साध्वियां गुरुदेव के प्रति अनंत–अनंत कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

समता की जलती मशाल – मोक्ष जाने की सीढ़ी है समता। लगता है शासनश्रीजी के असाता वेदनीय कर्मों का ज्यादा ही उदय चल रहा था। ५५ वर्षों के संयम पर्याय में अनेक रोगों ने, असाध्य बीमारियों ने अटैक किया, ४–५ बार बड़े–बड़े ऑपरेशन भी हुए लेकिन समता, सहिष्णुता, प्रसन्नता बेमिसाल थी। पिछले ८ महिनों से पाचन शक्ति बिल्कुल कमजोर हो गई। पानी भी नहीं पचता, डायरिया की भयंकर बीमारी, बैक–बॉन के नीचे इतना बड़ा घाव, भयंकर पीड़ा, इतनी शारिरीक व्याधियों से जूझते हुए भी उनकी समता गजब की थी।

हम साध्वियों का हृदय द्रवित हो जाता, हाथ–पैर कांप उठते, आंखें बहने लगती। वो कहती मेरे तो निकाचित कर्मो का उदय चल रहा है, वो तो भोगना ही पडेगा। तुम साध्वियां कितनी सेवा करती हो, रात में आराम से सोती भी नहीं हो, दिन में आहार भी नहीं करती हो, ऐसे गुणगान करते–करते गला अवरूद्ध हो जाता, आंखें सजल हो जाती। जितनी वेदना थी उतनी तो उन्होंने सेवा भी नहीं ली। ऐसी भीषण वेदना में भी चेहरे पर स्मित मुस्कान, सौम्य मुद्रा तथा गुरु–कृपा बस यही शब्द मुंह से निकलते रहते थे।

ऐसी समता, सहिष्णुता का कुछ अंश मेरे में भी आए। 'भिक्षु–भिक्षु म्हारी आत्मा पुकारे' गीत को सुनकर उन्हें अमन चैन की अनुभूति होती।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनिश्री कमल कुमारजी स्वामी का आध्यात्मिक तथा आत्मीय सहयोग सहोदरी भगिनी तथा हम साध्वियों को प्राप्त हुआ। गुरुदेव ने मुनिश्री को दादर भेजकर साध्वीश्री पर अनन्त कृपा करवाई, वह कभी नहीं भूल सकती। मुनिश्री दिन में दो–तीन बार पधारते, सेवा करवाते, आलोयणा करवाते, स्वाध्याय–गीत आदि सुनाते। वे हमेशा कहते– मेरी भगिनी को संथारे बिना मत जाने देना, उनका मुझ पर बहुत उपकार है। अंतिम समय में उनकी भावना सफल हुई। तेरापंथ के इतिहास में यह स्वर्णिम पृष्ठों में लिखा जाएगा कि एक भाई ने अपनी भगिनी को चौविहार संथारा पचखा कर भाई का फर्ज निभाया और आत्मबली साध्वीश्री के जीवन का कल्याण कर दिया।

वो मेरी रॉल मॉडल थी– मेरे संयम प्रदाता, जीवन नैया के खेवणहार आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मुझ पर महती कृपा कर नवदीक्षित साध्वी के रूप में वर्ष २०१४ में गंगाणै की पुण्य धरा पर मुझे शासनश्रीजी को वंदना करवाई। साध्वीश्री ने मुझे अंगुली पकड़कर लिखना सिखाया। संयम में, समिति–गुप्तियों में, साधुत्व से संबंधित प्रत्येक कार्य में जागरूकता की प्रेरणा तथा शिक्षण–प्रशिक्षण प्रदान करवाती रहती थी।

अग्रगण्य के रूप में आपश्री की मुझे लगभग १० वर्षों तक आध्यात्मिक सेवाएं प्राप्त हुई। लोच करना, सिलाई, रंगाई, भाषण देना, गीत गाना आदि सब कुछ आप सिखाती रहती। शासनश्रीजी मेरे बाह्य विकास के साथ आंतरिक विकास का भी बहुत ध्यान रखती थी। वे फरमाते– बड़ों के प्रति विनय रखना, सामने नहीं बोलना, तहत् कहना, मधुरभाषी रहना आदि। मेरे डॉक्टर, टीचर, मोटीवेटर सभी कुछ आप ही थी।

आपश्री ने आर्शीवाद देते हुए फरमाया– ''थे तो म्हारा टाबर हो, खूब हंसता–खिलता रहिज्यो, ज्ञान–ध्यान करता रहिज्यो, सरल–सरस जीवन जीणो है, अच्छी सतियां बणणो है।'' आपश्री का आशीर्वाद हर पल हर क्षण मेरी साधना को आगे बढ़ाता रहेगा।

शासनश्रीजी ने जो कुछ सिखाया, पठाया, सुदृढ़ संस्कार दिए, हृदय की अंतहीन गहराईयों से में अनंत कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं। तेरापंथ धर्मसंघ की दीपती साध्वी आखों से ओझल हो गई।

अंत में यही मंगलकामना करती हूं कि साध्वीश्रीजी की पवित्र आत्मा जहां कहीं भी है सिद्ध, बुद्ध, मुक्त बनें... इसी शुभाशंषा के साथ...

तू नहीं तेरी उल्फत अभी तक दिल में है।
बुझ चुकी है शमां, फिर भी रोशनी महफिल में है।

कर्म कसौटी पर खरी उतरीं

● 'शासनश्री' साध्वी विद्यावती 'द्वितीय' ●

शासनश्री साध्वी सोमलताजी का अनशनपूर्वक महाप्रयाण हो गया। वे अत्यंत शांत, धीर, गंभीर, व्यवहार कुशल, मिलनसार एवं मधुरभाषिणी साध्वी थी। वे अस्वस्थ चल रही थी। वेदनीय कर्म ने भी उनकी पूरी कसौटी की और उस कसौटी पर साध्वी सोमलताजी शत प्रतिशत खरी उतरी। उनका मनोबल प्रेरणादायी था। श्रद्धेय गुरुदेव की असीम अनुकंपा से उनके भ्राता उग्रविहारी मुनिश्री कमलकुमारजी स्वामी का अंतिम समय में खूब अच्छा सहयोग मिला यह साध्वी सोमलताजी के लिए अत्यंत सौभाग्य की बात थी। सहवर्ती साध्वियां साध्वी शकुंतलाश्रीजी, साध्वी संचितयशाजी, साध्वी जागृतप्रभाजी एवं साध्वी रक्षितयशाजी ने जी जान से उनकी सेवा कर महान कर्म निर्जरा की है एवं अपने दायित्व का निर्वहन किया है।

गुरुदेव की कृपा से दादर श्रावक–श्राविका समाज ने भी अपने दायित्व का सम्यक् निर्वहन किया है। सहवर्ती चारों साध्वियां खूब मनोबल बनाये रखें। चित्त समाधि में रहें। दिवंगत आत्मा के ऊर्ध्वारोहण की मंगलकामना।

विशेषताएं स्मृति पटल पर उभर रही हैं

● साध्वी निर्वाणश्री ●

महाशिवरात्रि के मंगल प्रभात में साध्वीश्री सोमलताजी ने मंगलमय अनशनपूर्वक महाप्रयाण कर दिया। वे जैन शासन के उदितोदित धर्मशासन तेरापंथ की अंतरंग सदस्या बनी। करीब ५६ वर्षों तक संयम की साधना की। अपनी अर्हताओं से स्वयं को आलोकित किया और शासन की सुषमा बढ़ाई। जटिल बीमारी से वीर योद्धा की भांति जूझते हुए समता की धार बहाती रही। गुरुकृपा एवं पुण्याई से उन्होंने अपनी हर इच्छा पूर्ण की।

उनके साथ गुरुकुलवास एवं बहिर्विहार में यदाकदा साथ रहने का प्रसंग आया। उनकी विशेषताएं मधुरभाषिता, व्यवहार कुशलता, सहिष्णुता आदि स्मृति पटल पर उभर रही हैं। पूज्यवर के नंदनवन प्रवास में जिस निकटता के साथ हमारा समय व्यतीत हुआ, वह चिरस्मरणीय रहेगा।

साध्वी शकुंतलाजी, साध्वी संचितयशाजी, साध्वी जागृतप्रभाजी व साध्वी रक्षितयशाजी ने जिस मनोयोग के साथ लंबे समय तक उनकी सेवा की है, वह काबिले तारीफ है। दिवंगत आत्मा के प्रति शत–शत श्रद्धांजलि।

साध्वी प्रमुखाश्री लाडांजी के कर कमलों से दीक्षित होना सौभाग्य की बात

● 'शासनश्री' साध्वी सरोज कुमारी ●

'शासनश्री' साध्वी सोमलताजी तेरापंथ धर्मसंघ में छोटी उम्र में दीक्षित हुई। सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति साध्वी प्रमुखाश्री लाडांजी के कर कमलों से दीक्षित होना उनका विशेष सौभाग्य था।

बाद में बीदासर में उनकी पवित्र सन्निधि में संयम–साधना का सुन्दर मौका मिला। बहिर्विहार में अनेक क्षेत्रों की यात्रा की, शासन की गौरववृद्धि की।

लम्बे समय से मुम्बई में प्रवास कर संघ एवं स्वास्थ्य की संभाल की। तपोमूर्ति मुनिश्री कमल कुमारजी का सहयोग मिला। मुम्बई में गुरुदेव के ऐतिहासिक चातुर्मास का दुर्लभ लाभ मिला। अनशन पूर्वक संयम यात्रा संपन्न कर शासन एवं परिवार का सुयश बढ़ाया।

'शासनश्री' साध्वीश्री सोमलता जी के प्रति चारित्रात्माओं के उद्गार

कितना बदल गया इंसान

● साध्वी अमित यशा ●
● साध्वी कारुण्य प्रभा ●

गुरु तुलसी की कृपा से संयम जीवन पाया,
चिन्तामणी हाथ आया।
महातपस्वी महाश्रमण प्रभु का सिर पर साया।।

गंगाणै की पुण्य धरा पर, सूरज छोटा के घर प्रांगण,
भाग्यवती लक्ष्मी घर आई, हर्षित पुलकित बैद आंगण।
मात पिता से सद् संस्कारों, का सिंचन पाया।।

आश जगी अभिलाष जगी थी तप संयम से प्रीत लगी थी,
गुरु चरणो में मोद मनाऊ दिल मे गहरी चाह जगी थी।
प्रभु की स्नेहिल नजरें पाकर, मन ये हरसाया।।

मघवागणी की जन्म धरा है, भैक्षव शासन हरा भरा है
महासती लाडां चरणों मे, संयम पाया खरा-खरा है।
जाग उठी पुण्याई, भिक्षु शासन मन भाया।।

महा वेदना तन में आई, मुख पर कभी नही दिखलाई,
संथारा कर अन्त समय में, काया कुन्दन सी चमकाई।
भ्रात कमल ने भगिनी को, संथारा पचखाया।।

गुरु सेवा का शुभ अवसर भी, भाग्योदय से घर में पाया,
परम समाधि देख तुम्हारी, जन-जन के मन हर्ष समाया।
संथारे की महकी सौरभ, जीवन सरसाया।।

महाश्रमण का संघ मिला है, जीवन का यह बाग खिला है,
गुरु कृपा से सेवाभावी, सतियों का शुभ योग मिला है।
सोमलता गुण गौरव मिलकर, सतियों ने गाया।।

तुमने इतिहास रचाया

● साध्वी अणिमाश्री ●

जय-जय-जय सति सोमलताजी, जीवन धन्य बनाया।
तुमने इतिहास रचाया।

गंगाणै की पुण्यधरा पर, संयम को स्वीकारा।
लाडसती की बनी लाडली, जीवन था मनहारा।
साध्वी प्रमुखा लाडसती से, नूतन जीवन पाया।

समता, क्षमता, कार्यकुशलता सहजयोग मनभाता।
निर्मलतम गंगा सा जीवन, संयम तप सरसाता।
श्रद्धा-भक्ति, विवेक प्रसून से, मन उपवन महकाया।

पौरूष की तुम अकथ कहानी, कण-कण को जागृत करती।
सृजन-सुधा के अमृत-घट से, रीती गागर भरती।
देश-विदेश की कर यात्रा, गण-गौरव खूब बढ़ाया।

उग्रविहारी तपोमूर्ति, मुनिवर हैं भ्रात तुम्हारे।
धर्मसंघ के इकलौते ये फड़दी संत हमारे।
दिल्ली से चलकर वीरा, सेवा करवाने आया।

शकुन्तलाजी संचितयशा ने, की सेवा सुखदाई।
साध्वी जाग्रत-रक्षित ने पाई सन्निधि वरदाई।
संथारा करवाकर तुमने, पूरा कर्ज चुकाया।

हुई असाता तन में तेरे, पर मन में समता भारी।
जागृत जीवन जीया तुमने, जाएं हम बलिहारी।
अंत समय में भ्रात मुनि ने, संथारा पचखाया।।

दिव्यलोक से गण की सेवा, करते रहना सतिवर।
गण का कर्ज चुकाना अब तुम, गण ही है श्रेयस्कर।
महाश्रमण प्रभुवर का हमने, पाया सुखकर साया।।

लय: जहां डाल डाल

केसर सुता चरणों में

● मुनि अमन कुमार ●

केसर सुता चरणों में रहते थे मगन,
रतन सुता चरणों में रहते थे मगन।
समता मय था जीवन बन गई धन-धन।।

धरती सम सहनशीलता, अुदभुत देखी वीरता,
हर क्षण निज में लीनता, ओ मेरे सतिवरम्,
आ जाओं एक बार गा रहे भू-गगन।।

संथारे में गमन, नश्वर छोड़ा ये तन,
विषय विकार शमन, सफल भावना हुई,
मुनिवरम् के बढ़े कदम, तैयार थी सतिवरम्,
पक्का कर पचखाया, मुनिवर ने था मन।।

गुरूवर त्रय कृपा सवाई, संयम की धुनी रमाई,
क्षमता की अलख जगाई, वाह -वाह रे सतिवरम्,
गजब थी सादगी, जिनवरम् सम बानगी,
निर्धूम ज्योत जगी, रूं-रूं में बस गए हो, करेंगे स्मरण।।

संथारा हुआ सफल, वो था सचमुच विरल,
भ्राता है मुनि कमल, तुम दवा रोगों की,
तुम अरि भोगों की, पराक्रमी गण की,
स्मृति सभा में चार तीर्थ अश्रुदार है नयन।।

चारों ही सतियों ने, सेवा का लाभ उठाया,
सौ-सौ तन-मन से, देते साधुवाद हम,
एकाकार, ना था भार, खाने-पीने से ना था प्यार,
हनुमान बनकर झोंका था निज जीवन।।

लय: गुरुदेव छोड़ हमको

संथारे में किया प्रयाण

● मुनि मोहजीत कुमार ●

संथारे में किया प्रयाण।
साध्वी सोमलता के सारे, सफल हुए अरमान।।

गणपति तुलसी कर कमलों से, संयम जीवन पाया,
आत्मभाव से भावित बनना, यह संकल्प सजाया।
उसी भाव में सहज सदा ही, बनी रही गलतान।।

ज्ञान, ध्यान, स्वाध्याय, साधना, जिनका नित प्रति क्रम था।
शासन सेवा, जनप्रतिबोधन, अविचल मन का श्रम था।
कमल मुनि की ज्येष्ठ भगिनी, होने की पाई शान।।

ऋजुता, मृदुता, सहज सौभ्यता, जन-जन के मन भाई ।
कर्म खपाए और खपाकर, पाओ आत्म ऊंचाई।
मोहजीत मुनि कहता आत्मा, का हो नित उत्थान।।

लय-धर्म की लौ

जीता जीवन मैदान है

● साध्वी योगक्षेमप्रभा ●

समता से सह विपुल वेदना, किया स्वर्ग प्रस्थान है।
सतिवर सोमलता जी ने, जीता जीवन मैदान है।।

लघुवय में महासतिवर लाडांजी से, शुभ संयम पाया,
शिक्षा, सेवा और साधना, का तरूवर है लहराया,
अमीदृष्टि पा आचार्यों की, किया स्व पर कल्याण है।।

कार्यकुशल, व्याख्यानकुशल, व्यवहारकुशल थी शासनश्री,
तन कोमल पर दृढ़ संकल्पी, स्पष्ट सहज थी शासनश्री,
उग्रविहारी, तपोमूर्ति की, भगिनी बनी महान् है।।

बेबस हुए चिकित्सक तो, खुद बनी चिकित्सक आत्मा से
पा पाथेय गुरुवर का पावन, राह चुनी शुभ आत्मा से,
सहयोगी सतियां सुखकारी, रखा निरंतर ध्यान है।।

महाशिवरात्रि के अवसर पर, अनशन अंतिम स्वीकारा,
अनुज कमल मुनिवर से पचखा, चौविहार यह संथारा,
महानगरी मुंबई में गूंजा, सोमलता अभिधान है।।

वापी तेरापंथ भवन में, गुणानुवाद हम करते हैं।
नंदनवन, पारस बडला के दृश्य सहज ही उभरते हैं।
भूली बिसरी यादों के तारों का अब संधान है।।

लय: कलयुग बैठा

आत्मशौर्य का नगीना है–संथारा

● साध्वी प्रबलयशा ●

अनासक्ति का गुलशन है – संथारा।
आत्मबल का बीमा है – संथारा ।
आत्मशौर्य का नगीना है– संथारा।

गंगाशहर की लाडली साध्वी सोमलताजी ने गुरुदेव तुलसी की आज्ञा से साध्वीप्रमुखा लाडांजी के कर कमलों से संयम रत्न पाया। सहज सरल व्यवहार से साधना को चमकाया। सरस प्रवचन शैली से कई श्रावक–श्राविकाओं को सुलभ बोधि बनाया।

बिहार, बंगाल, आसाम ऐसे कई दूरस्थ क्षेत्रों में लंबी–लंबी यात्रा करके संघ प्रभावना में चार चांद लगाये। गुरुदेव ने असीम कृपा करके मुनिश्री कमल कुमारजी स्वामी को, आपकी सेवा करवाने भेजा। यह भी एक दुर्लभ योग मिला।

साध्वीश्री शकुंतलाश्रीजी आपके तन का कपड़ा बनकर हमेंशा साथ रही। खूब सेवा की। सहयोगी साध्वियों की सेवा भी सराहनीय रही। लंबे काल से इतने अस्वस्थ होते हुए भी उनकी समता और मनोबल लाजवाब था। अंत में अनशन करके जीवन को धन्य बनाया। मुंबई वासियों ने भी जागरूकता से सेवा करके संघ का गौरव बढ़ाया। साध्वीश्री की आत्मा शीघ्रताशीघ्र मोक्ष का वरण करें।

वात्सल्य का स्रोत बहाने वाली साध्वी सोमलताजी

● साध्वी प्रज्ञाश्री ●

सौम्य प्रकृति मधुर वाणी, वात्सल्य का स्रोत बहाने वाली, जन–जन को आकर्षक व्याख्यान शैली से आकर्षित करने वाली, गुरु दृष्टि की आराधना से गुरु की अनन्य कृपा दृष्टि प्राप्त करने वाली साध्वी श्री सोमलताजी महासतियां जी लम्बे समय से असाता वेदनीय कर्म को समभाव से सहन करती हुई ८ मार्च को देवलोक हो गये। साध्वीश्री का जो वात्सल्य व कृपा दृष्टि मिली उसका स्मरण करते ही गद्–गद् हो गये। साध्वीश्री भाग्यशाली थी, गुरु सन्निधि का मंगल अवसर मिल गया, साथ ही गुरु कृपा से दिल्ली से चलकर मुनिश्री कमल कुमारजी स्वामी ने मुम्बई पधार कर बड़ी बहिन को दर्शन सेवा देने का अवसर प्राप्त किया, साता पहुंचाई व समाधि मरण में आध्यात्मिक सहयोग कर अन्तिम मनोरथ को पूर्ण करवाया।

साध्वी शकुन्तलाश्रीजी, संचितयशा जी, जागृतप्रभाजी, रक्षितयशा जी ने साध्वीश्री को सेवा कर साता पहुंचाई आपके योग से भी साध्वीश्री हर समय चित्त समाधि में ही रहते। अब तो खाली–खाली महसूस हो रहा है, फिर भी मुनिश्री के मनोबल, तपोबल से भी आपको संबल मिल रहा है। गुरुदेव का भी संबल प्राप्त हो गया। साध्वीश्री उत्तरोत्तर उच्च गति को प्राप्त करते हुए मोक्ष गति का वरण करे।

❖ मृत्यु एक नियति है। उसे टाला नहीं जा सकता। वह कभी भी, कहीं भी, किसी की भी और किसी भी अवस्था में हो सकती है।

-आचार्य श्री महाश्रमण

संघ समर्पित साध्वी सोमलताजी

तेरापंथ भवन नोखा में 'शासन गौरव' साध्वी राजीमतीजी के सान्निध्य में साध्वी सोमलता जी की स्मृति सभा में साध्वीश्री ने कहा कि गंगाशहर के बैद परिवार से एवं मुनिश्री कमलकुमारजी की बहिन साध्वी सोमलताजी सेवाभावी संघ, संघपति के प्रति समर्पित आत्मस्थ साध्वी थी। असाध्य बीमारी होते हुए भी उन्होंने समभाव रखा। साध्वी श्री ने उनकी आत्मा के उत्तरोत्तर प्रवर्धमान होने की मंगलकामना व्यक्त की। साध्वी समताश्रीजी ने कहा कि साध्वी सोमलताजी धर्मसंघ की ख्यातनामा, अच्छी, सहज सरल साध्वी थी।

'शासनश्री' साध्वीश्री सोमलता जी के प्रति चारित्रात्माओं के उद्गार

"हंसता-खिलता सौम्य चेहरा, बस नजरों के आगे आता है।
मन मानने को तैयार नहीं, क्या ऐसे कोई छोड़ जाता है।"

● साध्वी शकुंतलाश्री ●

श्रमण-श्रमणीयों ने ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप की आराधना कर अपनी आत्मा का कल्याण किया। स्व कल्याण के साथ पर कल्याण में भी वे निरंतर लगे रहे। अनेकों पथिकों को सन्मार्ग पर आरूढ़ होने की प्रेरणा दी।

कल्पतरू सम भैक्षव शासन में प्रवर्जित होने वाला साधक आपने आपको धन्य मानता है। इस शासन में गुरु ही सर्वेसर्वा होते हैं। वह सदगुरु की शरण प्राप्त कर परमार्थ पद की ओर आगे बढ़ता है तथा जीवन की तीनों अवस्थाओं में (बचपन, यौवन, बुढ़ापा) निश्चिंतता का जीवन जीता है। उसी परमार्थ पद पर चरण न्यास करने वाली दिव्यात्मा थी- 'शासनश्री' साध्वी सोमलताजी।

"मेरे पास वो शब्द कहां,
जिसका मैं गुणगान करूं।
४१ वर्षों से साथ आपका,
किन शब्दों में बयां करूं।।"

नंदनवन का महकता पुष्प शासनश्री साध्वी सोमलताजी के लिए क्या लिखूं? क्या कहूं? शब्द सीमित है, भाव असीम है। ४१ वर्षों के सुनहरे अनुभवों, संस्मरणों को कुछ पंक्तियों, एक पेज या एक डायरी में लिखना असंभव है। मेरा परम सौभाग्य था कि इतने वर्षों तक मुझे उनके पवित्र आभामंडल तथा सुखद सन्निधि में रहने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने मेरी ज्ञान चेतना को जगाया, विकास की राहें प्रशस्त की, मुझ पर बहुत उपकार किया जिसे अंतिम सांस तक नहीं भूल सकती। शासनश्रीजी के जीवन को स्वर्णमय बनाने वाले कुछ गुण हमेशा मेरे स्मृति पटल पर अंकित रहेगें। उन गुणों की कुछ झलकियां यहां प्रस्तुत कर रही हूं:

१. 'समयं गोयम मा पमायए' इस सूक्त को आत्मसात करने वाली साध्वीश्रीजी समय का क्षण-क्षण उपयोग करती। उन्होंने अप्रमत्ता का जीवन जीया तथा हम साध्वियों को भी यही प्रेरणा देती रहती।
२. उनकी वाणी में माधुर्य रस था जो प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ओर खींच लेता था। वे हमें भी कहती कि वाणी को वीणा की तरह रखो।
३. 'सिम्पल लिविंग हाई थिंकीग'- उनके विचार बहुत शुद्ध तथा पवित्र थे। उनके भावों में निर्मलता रहती जो उनके आचरण तथा व्यवहार में झलकती थी।
४. स्नेह, सौहार्द, गुणग्राहकता, निश्छलता आदि गुणों से सुशोभित आपका व्यक्तित्व हमारे लिए अनुकरणीय है।
५. साध्वीश्री दर्शनार्थ आने वाले हर श्रावक-श्राविका को नाम लेकर बतलाती तथा मुक्त भाव से सबको प्रेम बांटती थी। उनके आत्मीय व्यवहार से सभी भाव-विभोर हो जाते।
६. वे प्रबुद्ध प्रवचनकार मधुर संगीतकार, कुशल रचनाकार के साथ-साथ स्वाध्याय प्रेमी भी थी। प्रतिदिन लगभग २१०० गाथाओं का स्वाध्याय करती थी।
७. साध्वीश्री की गुरु के प्रति श्रद्धा तथा भक्ति अटूट थी। उनके हृदय की हर धड़कन में, मस्तिष्क के हर न्यूरोन्स में केवल गुरु का ही नाम रमा हुआ था।
८. आपश्री का समर्पण बेजोड़ था। आपका मस्तक गुरु चरणों में सदा प्रणत रहता। गुरु दृष्टि की आराधना के लिए आप सदैव समर्पण भाव से तैयार रहती।
९. आपका आभामंडल बहुत पवित्र तथा सकारात्मक ऊर्जा से भरा हुआ था। हर कोई आपके आभावलय में आकर सुख-शांति का अनुभव करता।

अनेक गुणों से सुशोभित साध्वीश्री का जीवन हर पल हमें साधना के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहेगा। मैं धन्य तथा कृतज्ञ हूं आप जैसे अग्रगण्य को पाकर।

मैं विनम्रता की नजीर साध्वी प्रमुखाश्रीजी, आदरास्पद मुख्य मुनिप्रवर, आदरणीया साध्वीवर्याजी के प्रति भी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं। नंदनवन चतुर्मास में आप सभी का आत्मीय प्रेरणा-पाथेय प्राप्त होता रहता था। वो स्वर्णिम पल शासनश्री साध्वीश्रीजी के जीवन की अमूल्य धरोहर बन गया।

'शासनश्री' साध्वीश्री सोमलता जी! आपकी भावना थी कि मुझे अंतिम समय में संथारा आए। आपको पहले ही कुछ पूर्वाभास हो चुका था, ऐसा प्रतीत होता है। आपकी भावना सफल हुई तथा आपने शूरवीर वीरांगना की तरह संथारा कर अपने जीवन को धन्य बनाया। तेरापंथ शासन की गरिमा पर सुयश का कलश चढ़ाया। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की शासना में नया इतिहास रच दिया तथा धर्मसंघ में अपना नाम रोशन कर दिया।

मुझे गौरव है कि अंतिम समय में चौविहार तेले में रात्रि में तिविहार संथारा पचखाने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ और मैं उनके उपकारों से कुछ ऋणी हो सकी।

अंत में, श्रद्धार्पण के साथ यही मंगलकामना करती हूं कि शासनश्री की दिव्य आत्मा जहां कही भी हो शीघ्रातिशीघ्र मोक्ष का वरण करें।

पुष्प एक गुलाब का, मुरझा गया बाग से।
दे गया सुगंध संसार को, त्याग के अनुराग से।।

● साध्वी संचित यशा ●

सृष्टि की फुलवारी में अनेक पुष्प खिलते हैं और मुरझा जाते हैं लेकिन पुष्प की महत्ता व विशेषता इसी में है कि वह अपनी सौरभ से पूरी बगिया को सुगंधित कर देता है और लोगों को ताजगी व प्रफुल्लता से भर देता है। विश्व में अनेक जीव जन्म लेते हैं और मरते हैं लेकिन जीवन उसी का सार्थक होता है जो दूसरों के जीवन को भी नई दिशा व ऊर्जा से भरते हैं। ऐसा जीवन जीने वाले थे- 'शासनश्री' साध्वी सोमलता जी। वे तेरापंथ धर्मसंघ की विलक्षण साध्वी थी। उनका हृदय कोमलता व करूणा से ओत-प्रोत था। उनकी गुरु भक्ति बेजोड़ थी, वाणी में मधुरता थी, गायन कला में प्रवीणता थी, कार्यशैली अपूर्व थी। निज पर शासन, फिर अनुशासन को आत्मसात कर रखा था। उनका जीवन निर्लिप्त, निस्वार्थ और निस्पृह था। जल कमलवत् रहकर हम साध्वियों को ज्ञान दिया, सद्संस्कारों का सिंचन किया। ऐसी महान् साध्वीश्रीजी की नेहछाया में मुझे पुल्लवित होने का सौभाग्य मिला यह मेरी पुण्यवानी है। आपने मेरे जीवन को सद्गुणों से सजाया, संवारा। २४ वर्षों की अवधि में मैने उनके व्यक्तित्व को अनेक कोणों से देखा उसको शब्दों में बांधना मेरे लिए दुरूह है फिर भी मैं कुछ बिन्दुओं से उनके व्यक्तित्व व कर्तृत्व का उल्लेख करना चाहूंगी।

ज्ञान का अक्षय कोषः-

आपके पास ज्ञान का अखूट खजाना था। ज्ञानावरणीय कर्म का प्रबल क्षयोपशम था जो कुछ भी पढ़ लेते वह दीर्घकाल तक स्मृति के प्रकोष्ठों में सुरक्षित रहता। ज्ञान को समृद्ध बनाने के लिए घंटो-घंटो स्वाध्याय करते। वे प्रायः हम साध्वियों को शिक्षा देते हुए कहते- स्वाध्याय अमृत रसायन है। इसका सेवन करने से परम आनन्द की अनुभूति होती है। वेदना को समभाव से झेलने की शक्ति मिलती है। इसलिए तुम लोगों को भी आगम का स्वाध्याय हमेशा करना चाहिए। आप भी अप्रमत्त रहकर आगम स्वाध्याय के साथ अन्य साहित्यों का अध्ययन करते, नोट्स लिखते और उनका उपयोग प्रवचन करते समय किया करते। लेखन में, गीत में, प्रवचन में नवीन शब्दों का चयन करते। मैंने २४ वर्ष तक निरन्तर प्रवचन सुना, उन्होंने कभी भी एक बात को दोहराया नहीं।

सहिष्णुता की दिव्य मूरतः-

शासनश्रीजी ने अपने जीवन का साध्य बनाया कि मुझे समभाव से अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों को सहन करना है। शारीरिक वेदना ४२ वर्ष तक उनके संग रही। उसने जो पीड़ा दी उसको वे प्रसन्न चित्त से सहन करते रहे। कभी घबराये नहीं बल्कि हंसते-मुस्कारते रहे। जब साध्वियां पूछती इस वेदना को कैसे सहन कर पाते? आप प्रत्युत्तर में कहते- यदि शारीरिक वेदना को सहन नहीं करूंगी तो मृत्यु के समय होने वाली महावेदना को कैसे सहन कर पाऊंगी। मुझे कोमा में नहीं जाना है। जागरूकता पूर्वक समाधि मरण को प्राप्त करना है। सचमुच में अंतिम समय में उन्होंने अपने सपने को साकार किया। तेले का प्रत्याखान करना, अपने आप आनशन कर लेना। तीन दिन पहले ही बता दिया मैंने जिंदगी भर के लिए चौविहार प्रत्याख्यान कर लिया है। जब तक देह से विदेहावस्था को प्राप्त नहीं हुए तब तक सचेत अवस्था में रहे। यह सब सहिष्णुता की अनुप्रेक्षा का ही सुपरिणाम था।

सृजन शीलताः-

आपको प्रकृति से प्रेम था। रात्रि में सोते तब कहते मेरा बिछौना आकाश दिखे, चन्द्रमा दिखे वैसे स्थान पर करना। ताकि मैं प्रकृति के साथ भ्रमण कर सकूं। आप गीत की रचना करते उसमें प्रकृति का सजीव चित्रण भी प्रस्तुत करते। आपकी रचनाएं चैतन्य को जागरण करने वाली होती। एक गीत में आपने लिखा है-

सुख निर्झर बहता भीतर में,
क्यों भटक रहे हो बाहर में।
मोती मिलते हैं सागर में,
क्यो भटक रहे हो बाहर में।।

गीतों में गुरु निष्ठा, संघ निष्ठा और आत्म निष्ठा के भाव होते। जीवन में अंतिम अवसान के समय में गुरु की महत्ता का गीत बनाया। तीर्थंकरों की स्तुति परक गीत भी वीतराग भाव को जागृत करने वाले होते।

प्रातः उठ परमेष्ठी वंदन करू सदा निष्काम।
शांति रहेगी आठो याम।।

विनम्रता की तस्वीर-

आपका जीवन विनय भाव से ओत-प्रोत था। समय-समय पर हम साध्वियों का विनम्र रहने का प्रशिक्षण भी देती और फरमाते कि धर्म का मूल-विनय है। अध्यात्म जीवन जीने का प्रथम सूत्र विनय है, इसलिए हमेशा बड़ों का विनय करना चाहिए।

आप स्वयं विनम्र थे। आपका प्रथम चतुर्मास सरदारपुरा में हुआ। उस समय आपके साथ जो साध्वियां वे सभी रत्नाधिक थी। आप अग्रणी थी। छोटे के काम बड़े करे यह आपको अच्छा नहीं लगता इसलिए साध्वीश्री शिवमालाजी को करने नहीं देते स्वयं करने की कोशिश करते। साध्वियों का सम्मान करते। यह थी उनकी विनम्रता की तस्वीर।

शासनश्री साध्वी सोमलता जी का जीवन विविध गुणों से सुरभित था। उदार, प्रमोद भावना, सहजता, स्वच्छता और प्राणी मात्र के साथ प्रेम भाव रखने वाली साध्वीश्रीजी को अग्रगण्य के रूप् में पाकर मैं अत्यन्त खुश हूं। अन्त में पुण्यात्मा, दिव्यात्मा के प्रति मंगलकामना करती हूं कि वे अतिशीघ्र महाविदेह क्षेत्र में जाकर मुक्ति का वरण करें।

शिविर में ६० लोगों ने किया रक्तदान

सरदारपुरा।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव रिदम् राजस्थान के तहत तेरापंथ युवक परिषद सरदारपुरा व अंकुर मेटल के संयुक्त तत्वज्ञान में लगे रक्तदान शिविर में ६० रक्तवीरों ने रक्तदान किया।

इस रक्तदान की खास बात यह थी की आधे से ज्यादा लोग प्रथम बार रक्तदान करने वाले थे, साथ में युवा शक्ति व मातृशक्ति भी रक्तदान में पीछे नहीं रही। स्थानकवासी संप्रदाय की साध्वी कमलप्रभा जी आदि ठाणा के मंगल मंत्रोच्चार के पश्चात विधायक अतुल भंसाली द्वारा शिविर का शुभारंभ किया गया। तेयुप सरदारपुरा अध्यक्ष कैलाश जैन ने बताया की मार्च माह में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में पूरे राजस्थान में जगह-जगह पर रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जा रहा है।

आज का रक्त दान शिविर निर्मल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा निर्मित श्री श्री रवि शंकर ब्लड डोनेशन सेंटर रक्तशाला में आयोजित किया गया। शिविर प्रायोजक सुनील चौपड़ा ने बताया कि थैलीसीमिया पीड़ित बच्चों व एम्स अस्पताल में ब्लड की भारी कमी को ध्यान में रखते हुए एम्स व रोटरी ब्लड बैंक को रक्त संग्रहण हेतु बुलाया गया।

मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव रिदम् के अंतर्गत आयोजित हुआ रक्तदान शिविर

रक्त दान शिविर संयोजक अर्पित चोपड़ा व आशीष वडेरा ने बताया कि शिविर में जोधपुर शहर विधायक अतुल भंसाली, जोधपुर उत्तर की महापौर कुंती देवड़ा के साथ गणमान्य व्यक्तियों एवं परिषद के साथियों की उपस्थिति रही।

तेयुप सरदारपुरा के संगठन मंत्री देवीचंद तातेड व अंकुर मेटल के संचालक अर्पित चोपड़ा ने केम्प मे पधारे हुए सभी रक्तवीरों, प्रायोजक परिवार, ब्लड बैंक टीम आदि के सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया।

राइज़ एंड शाइन कार्यशाला आयोजित

हैदराबाद।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा सिकंदराबाद के तत्वावधान में तेलंगाना के २२ क्षेत्रों में ज्ञानशालाएं व्यवस्थित रूप से संचालित की जा रही है। ज्ञानशाला का नया शैक्षणिक वर्ष २०२४ आरंभ हो चुका है। धर्मसंघ में पूर्ण समर्पित भाव से सेवाएं देने वाली ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं के लिए मंथन व प्रोत्साहन स्वरूप 'राइज़ एंड शाइन' कार्यशाला का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के पश्चात् प्रशिक्षिकाओं द्वारा सुंदर मंगलाचरण की प्रस्तुति हुई। तेलंगाना आंचलिक सह संयोजिका सरोज लोढ़ा ने सभी का स्वागत-अभिनंदन किया। सीमा व संगीता जैन ने रोचक प्रस्तुति के साथ प्रशिक्षिकाओं को पूरे जोश के साथ ज्ञानशाला को नव ऊंचाइयों पर पहुंचाने का आह्वान किया। 'आप की अदालत' थीम पर आधारित एक रोचक नाटिका के माध्यम से क्षेत्रीय संयोजिका संगीता गोलछा के व्यक्तित्व की खूबियों को उजागर कर सम्मानित किया गया। तेमम अध्यक्षा व क्षेत्रीय सह संयोजिका कविता आच्छा ने अपने विचार रखे और शुभकामनाएं प्रेषित की। संगीता गोलछा ने अपनी टीम के सहयोग व वरिष्ठ पदाधिकारियों के नियमित मार्गदर्शन के लिए कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उनका सम्मान किया। अंजू बैद ने ज्ञानशाला कार्य वर्ष २०२३ की समीक्षा करते हुए अपने विचार व सुझाव दिए। केंद्र द्वारा ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं के लिए संचालित परीक्षाओं में वर्ष २०२२ में विशेष योग्यता प्राप्त व विज्ञ, विशारद व स्नातक का पाठ्यक्रम पूर्ण करने वाली प्रशिक्षिकाओं को स्मृति चिह्न भेंट किया गया। साथ ही ज्ञानार्थी परीक्षा-२०२३ के हैदराबाद स्तर पर सर्वोच्च स्थान प्राप्त ज्ञानार्थियों का मोमेंटो इकाई संयोजकों को प्रदान किया गया।

शासनमाता की द्वितीय वार्षिक पुण्यतिथि पर रियायती डायबिटिक हेल्थ चेक-अप कैंप का आयोजन

राजाजीनगर ।

तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम में शासनमाता साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभाजी की द्वितीय वार्षिक पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए रियायती दर पर डायबिटिक हेल्थ चेक-अप कैंप का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र का सामूहिक उच्चारण करते हुए गुरुदेव द्वारा प्रदत्त शासनमाता के जाप से कैम्प की शुरुआत हुई। डायबिटीक हेल्थ चेक-अप के अंतर्गत फास्टिंग ब्लड शुगर, पोस्ट प्रैंडियल ब्लड शुगर, तीन महीने की औसत ब्लड शुगर, लिपिड प्रोफाइल-कोलेस्ट्रॉल, सिरम क्रिएटनिन, इलेक्ट्रो कॉर्डियोग्राम जांच सम्मिलित किये गये। इस कैम्प से १११ सदस्य लाभान्वित हुए। तेयुप सदस्यों द्वारा उपस्थित लाभार्थियों को एटीडीसी श्रीरामपुरम द्वारा प्रदत्त विभिन्न सेवाओं एवं विशेषज्ञ डॉक्टरों की उपलब्धता से अवगत करवाया गया। सभी लाभार्थियों ने एटीडीसी द्वारा किए जा रहे हैं काम की खूब खूब सराहना की। तेयुप से जयंतीलाल गांधी, ललित मुणोत, मोहन चौरडिया, अभिषेक पीपाड़ा एवं हरीश पोरवाड़ ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

संक्षिप्त खबर

वीतराग बनने के लिए कषाय विजय है जरूरी

पर्वत पाटीया। अभातेयुप के महत्त्वपूर्ण आयाम वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन आचार्य श्री महाश्रमण जी के आज्ञानुवर्ती बहुश्रुत परिषद् सदस्य मुनि उदित कुमार जी एवं सुशिष्य मुनि पारस कुमार जी आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में तेयुप पर्वत पाटीया द्वारा तेरापंथ भवन पर्वत पाटीया में किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण से हुआ। मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि वीतरागता हमारे जीवन का उच्चतम आदर्श है। आदर्श जितना ऊँचा होगा, जीवन उतना ही ऊँचा होगा।

वीतराग बनने के लिए कषायों पर विजय प्राप्त करना जरूरी है।वीतरागी के लिए धर्म रूपी उद्यान में भ्रमण करना पड़ता है। मुनि पारस कुमार जी ने गोचरी व भावना के महत्त्व को समझाया। मुनि ज्योर्तिमयकुमार जी ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर महासभा, अभातेयुप, स्थानीय सभा, महिला मंडल, तेयुप आदि संस्थाओं के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे। कार्यशाला में लगभग २०० संभागियों की उपस्थिति रही। तेयुप अध्यक्ष दिलीप चावत ने स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री पवन बुच्चा ने किया।

महिला दिवस पर एटीडीसी में विशेष छूट

रायपुर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् का महनीय उपक्रम तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर व डेन्टल केयर में दिनांक ८ से १० मार्च २०२४ तक अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य पर केवल महिलाओं हेतु विभिन्न प्रकार की जांचों में विशेष छूट का लाभ दिया गया।

ब्लड शुगर, कंप्लीट ब्लड काउंट, एचबीएवनसी, थायराइड, विटामिन आदि कुल १२३ प्रकार की जांच का लाभ ५९ महिलाओं द्वारा लिया गया। निशुल्क डेन्टल चैकअप का लाभ भी महिलाओं ने प्राप्त किया।

संथारा समाचार

परमपूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी की आज्ञा से श्रीमती मोर देवी कोचर (८५ वर्ष) धर्म पत्नी श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. जीवनमल कोचर, माताजी ललित, सुभाष, प्रवीण कोचर, छोटी खाटू निवासी, दिल्ली प्रवासी को तेरह (१३) की तपस्या के उपरान्त समणी डॉ. मंजू प्रज्ञा जी और समणी स्वर्ण प्रज्ञा जी के द्वारा देव, गुरु, धर्म की अनन्त साक्षी एवं गाँधीनगर सभा अध्यक्ष श्री कमल गाँधी, विकास मंच (तेरापंथ भवन) महामंत्री श्री महेन्द्र श्यामसुखा एवं अनेकानेक गणमान्य श्रावकों, परिवार व सम्पूर्ण श्रावक समाज की साक्षी में दिनांक ११/३/२०२४ को रात्रि ९ बजकर ४१ मिनट पर तिविहार संथारा का प्रत्याख्यान करवाया गया।

❖ अंधकार से डरने की जरूरत नहीं। डरना कोई समाधान भी नहीं। बस एक छोटा–सा दीप जलाने की अपेक्षा है।

❖ मृत्यु एक नियति है। उसे टाला नहीं जा सकता। वह कभी भी, कहीं भी, किसी की भी और किसी भी अवस्था में हो सकती है।

-आचार्य श्री महाश्रमण

संबोधि

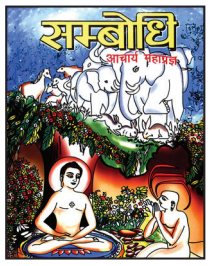

साध्य-साधन-संज्ञान

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

११. आत्मैव परमात्मास्ति, रागद्वेषविवर्जितः ।
शरीरमुक्तिमापन्नः, परमात्मा भवेदशो ॥

आत्मा ही परमात्मा है। आत्मा राग-द्वेष और शरीर से मुक्त होकर परमात्मा हो जाता है ।

जैन दर्शन की यह मान्यता है कि आत्मा ही परमात्मा है। विश्व जनमत का बहुत बड़ा भाग आत्मा को परमात्मा नहीं मानता। वह कहता है कि परमात्मा एक है। अन्य आत्माएं उसी परमात्मा की अंश हैं। वे शुद्ध होने पर परमात्मा में ही विलीन हो जाती हैं। स्वतंत्र रूप से उनका कोई अस्तित्व नहीं है।

जैन-दर्शन इससे सहमत नहीं है। वह प्रत्येक आत्मा को पूर्ण स्वतंत्र मानता है।

आत्मा एक अखंड द्रव्य है। उसके अंश कभी पृथक् नहीं हो सकते। अंशों को यदि पृथक् रूप से मानें तो जीवात्मा- आत्मा के जो सुख-दुःख के भोग होते हैं वे सब परमात्मा के होते हैं, इससे परमात्मा की शुद्धता नहीं रह सकती ।

क्लेश, कर्म फल और चेष्टाओं से जो अपरामृष्ट पुरुष विशेष है वह परमात्मा है। परमात्मा की इस परिभाषा से अन्य आत्माओं का उसमें समावेश होना संभव नहीं हो सकता क्योंकि परमात्मा वीतराग है और अन्य आत्माएं सराग।

आत्मा की स्वतंत्र सत्ता मान लेने पर परमात्मा की अनेकता में भी कोई बाधा नहीं आती। आत्मा की पृथक् सत्ता और अनंतता गीता से भी स्पष्ट है। श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं- 'ऐसा कोई समय नहीं था, जब मैं नहीं था, तू नहीं था, ये राजा नहीं थे और न कभी कोई ऐसा समय आएगा जब कि हम सब इसके बाद नहीं रहेंगे।

आत्मा को एक मान लेने पर विविध व्यक्तियों में विविधता का हेतु क्या होगा, कर्म फल की विभेदता क्यों है और मरने और जीने वाली आत्माएं क्या एक या अनेक हैं- कितने ही प्रश्न हमारे सामने हैं। आत्मा को अनेक मान लेने पर ये विरोध नहीं रहते।

आत्मा और परमात्मा एक है- यह एक ही शर्त पर माना जा सकता है, वह है स्वरूप।' एक आत्मा का जैसा सत्-चित्-आनन्द स्वरूप है, वही सबका है। जब आत्मा इस स्वरूप को प्राप्त कर लेती है तब वह परम आत्मा बन जाती है। स्वरूपतः सब आत्माएं एक हैं, लेकिन सत्ता की दृष्टि से एक नहीं हैं। एक आत्मा का स्वरूप आज प्रकट हुआ है और एक का हजार वर्ष बाद। स्वरूप-प्राप्ति की दृष्टि से दोनों एक कैसे हो सकती हैं?

कई दार्शनिक एक ही परमात्मा को मानते हैं। उनका कहना है, अन्य कोई परमात्मा नहीं बन सकता। 'नर से नारायण' और आत्मा ही परमात्मा है' इन लोकोक्तियों का क्या अभिप्राय है, यह भी हमें समझना होगा। जैन दर्शन की मान्यता के आधार पर प्रत्येक आत्मा में परमात्मत्व का बीज विद्यमान है। जब इसे अनुकूल योग मिलता है वह परमात्मा बन जाती है।

परमात्मा वही आत्मा होती है, जो राग-द्वेष और शरीर से मुक्त होती है। आत्मा और परमात्मा में केवल आवरण और अनावरण का ही अंतर है। आवृत आत्मा आत्मा है और अनावृत आत्मा परमात्मा। उनमें स्वरूप भेद नहीं, केवल अवस्था-भेद है।

१२. स्थूलदेहस्य मुक्त्याऽसौ, भवान्तरं प्रधावति ।
अन्तरालगतिं कुर्वन्, ऋजुं वक्रां यथोचिताम् ॥

आत्मा मृत्यु के क्षण में स्थूल शरीर से मुक्त होकर भवांतर-पुनर्जन्म के लिए प्रस्थान करती है। उस समय उत्पत्ति स्थान के अनुसार उसकी ऋजु अथवा वक्र अंतराल गति होती है।

१३. यावत् सूक्ष्मं शरीरं स्यात्, तावन्मुक्तिर्न जायते।
पूर्णसंयमयोगेन तस्य मुक्तिः प्रजायते ॥

जब तक सूक्ष्म शरीर तैजस और सूक्ष्मतर शरीर कार्मण विद्यमान रहता है, तब तक आत्मा मुक्त नहीं होती। आत्मा की मुक्ति पूर्ण संयम-सर्व संवर की अवस्था में होती है तब दोनों शरीर छूट जाते हैं। (क्रमशः)

श्रमण महावीर

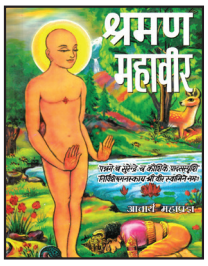

स्वतन्त्रता का संकल्प

मैं जब-जब यह सुनता हूं कि मृगसर कृष्णा दशमी को महावीर दीक्षित हो गए, तब-तब मेरे सामने कुछ प्रश्न उभर आते हैं। क्या कोई व्यक्ति एक ही दिन में दीक्षित हो जाता है? क्या दीक्षा कोई आकस्मिक घटना है? क्या यह दीर्घकालीन चिंतन-मनन का परिणाम नहीं है?

यदि इन प्रश्नों के लिए अवकाश है तो फिर कोई आदमी एक ही दिन में दीक्षित कैसे हो सकता है? इस संदर्भ में मेरी दृष्टि उस तर्कशास्त्रीय घट पर जा टिकी जो अभी-अभी कजावा से निकाला गया है। उस पर जल की एक बूंद गिरी और वह सूख गई, दूसरी गिरी और वह भी सूख गई। बूंदों के गिरने और सूखने का क्रम चालू रहा। आखिरी बूंद ने घट को गीला कर दिया। मैंने देखा घट की आर्द्रता आखिरी बूंद की निष्पत्ति नहीं है, वह दीर्घकालीन विन्दपात की निष्पत्ति है। इसी तथ्य के परिपार्श्व में मैंने देखा, दीक्षा किसी एक दिन की निष्पत्ति नहीं है। वह दीर्घकालीन चिन्तन-मनन और अभ्यास की निष्पत्ति है।

महावीर ने दीर्घकाल तक उस समय के प्रसिद्ध वादों-क्रियावाद, अक्रियावाद, विनयवाद और अज्ञानवाद का सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन किया। उनकी दीक्षा उसी की निष्पत्ति है।

महावीर घर से अभिनिष्क्रमण कर क्षत्रियकुंडपुर के बाहर वाले उद्यान में चले गये। यह स्वतंत्रता का पहला चरण था। घर व्यक्ति को एक सीमा देता है। स्वतंत्रता का अन्वेषी इस सीमा को तोड़, अखण्ड भूमि और अखण्ड आकाश को अपना घर बना लेता है।

स्वतंत्रता का दूसरा चरण था-परिवार से मुक्ति। परिवार व्यक्ति को दूसरों से विभक्त करता है। स्वतंत्रता का अन्वेषी उसका विसर्जन कर मानव जाति के साथ एकता स्थापित कर लेता है।

प्रबुद्ध मेरा अभिन्न मित्र है। वह स्वतंत्रता के लिए विसर्जन की प्राथमिकता देने के पक्ष में नहीं है। उसका कहना है कि भीतरी बन्धन के टूटने पर बाहरी बंधन हो या न हो, कोई अन्तर नहीं आता और भीतरी बंधन के अस्तित्व में बाहरी बंधन हो या न हो, कोई अंतर नहीं आता। उसने अपने पक्ष की पुष्टि में कहा, 'महावीर ने पहले भीतर की ग्रंथियों को खोला था, फिर तुम बाहरी ग्रन्थियों के खुलने को प्राथमिकता क्यों देते हो? उसने अपनी स्थापना के समर्थन में आचारांग सूत्र की एक पहेली भी प्रस्तुत कर दी, स्वतंत्रता का अनुभव गांव में भी नहीं होता, जंगल में भी नहीं होता। वह गांव में भी हो सकता है, जंगल में भी हो सकता है।'

उसके लम्बे प्रवचन को विराम देते हुए मैंने पूछा, 'मित्र! पहले यह तो बताओ, वह भीतरी बंधन क्या है?'

'अहंकार और ममकार ।'

'महावीर ने पहले इनका विसर्जन किया, फिर घर का। तुम्हारे कहने का अभिप्राय यही है न?'

'जी हां।'

अहंकार और ममकार का विसर्जन एक मानसिक घटना है। स्वतंत्रता की खोज में उसकी प्राथमिकता है। मैं इससे असहमत नहीं हूं। किन्तु मेरे मित्र! बाह्य जगत् के साथ तादात्म्य स्थापित करने के लिए क्या बाहरी सीमाओं का विसर्जन अनिवार्य नहीं है? मानसिक जगत् में घटित होने वाली घटना को मैं कैसे देख सकता हूं? उस घटना से मेरा सीधा सम्पर्क हो जाता है जो बाह्य जगत् में घटित होती है। मैंने महावीर के विसर्जन को प्राथमिकता इसलिए दी है कि वह वाह्य जगत् में घटित होने वाली घटना है। उसने समूचे लोक को आश्वस्त कर दिया कि महावीर स्वतंत्रता की खोज के लिए घर से निकल पड़े हैं। उनका अभिनिष्क्रमण समूची मानव जाति के लिए प्रकाश स्तम्भ होगा।'

'क्या गृहवासी मनुष्य स्वतंत्रता का अनुभव नहीं कर सकता?' (क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

सत्य शोध का यात्रा पथ

सम्यक्त्व के लिए न्यूनतम चारित्र का होना भी अनिवार्य है। उसके बिना सम्यक्त्व प्राप्त नहीं हो सकता। इसी प्रकार चारित्र के विकास के लिए भी दर्शन मोहनीय का विलय आवश्यक है। सम्यक्त्व प्राप्ति की यह अर्हता है कि उसमें (उस व्यक्ति में) चारित्र (अनन्तानुबंधी का विलय) भी एक सीमा तक हो। इसलिए सम्यक् दर्शन के लिए दर्शन मोह के विलय के साथ-साथ अर्हता स्वरूप न्यूनतम आचार (अनन्तानुबंधी कषाय का विलय) भी अनिवार्य है।

चारित्र मोहनीय के मुख्य भेद दो हैं-कषाय और नोकषाय। दर्शनमोहनीय एक ही है, वह है मिथ्यात्व मोहनीय। ताप डिग्री की तरतमता की भांति अथवा तीव्रता और मन्दता की अपेक्षा से उसके तीन भेद हो जाते हैं- सम्यक्त्व वेदनीय, मिश्र वेदनीय और मिथ्यात्व वेदनीय। दर्शन मोहनीय का सघन रूप मिथ्यात्व वेदनीय है, कुछ हल्का रूप मिश्र वेदनीय है और उससे भी हल्का रूप सम्यक्त्व वेदनीय है। मिथ्यात्व वेदनीय का क्षयोपशम होने से मिथ्यादृष्टि उज्ज्वल बनती है, परिणामस्वरूप जीव कुछ पदार्थों को सम्यक् श्रद्धा का विषय बना लेता है।

मिश्र वेदनीय का क्षयोपशम होने से सम्यक् मिथ्यादृष्टि उज्ज्वल बनती है, फलतः जीव बहुत पदार्थों को अपनी सम्यक् श्रद्धा का विषय बना लेता है। सम्यक्त्व वेदनीय का क्षयोपशम होने से जीव को क्षायोपशमिक सम्यक्त्व प्राप्त हो जाता है, पदार्थों पर सम्यक् श्रद्धान पुष्ट हो जाता है।

जब तक मिथ्यात्व वेदनीय का उदय रहता है, जीव को सम्यक् मिथ्यादृष्टि प्राप्त नहीं हो सकती। जब तक मिश्र वेदनीय का उदय रहता है, क्षायोपशमिक सम्यक्त्व प्राप्त नहीं हो सकता। जब तक सम्यक्त्व वेदनीय का उदय रहता है, औपशमिक अथवा क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त नहीं हो सकता।

मिथ्यादृष्टि, सम्यक् मिथ्यादृष्टि और सम्यक् दृष्टि- ये तीनों मोह-कर्म-विलय (क्षयोपशम आदि) जन्य भी हैं और मोहकर्म-उदय जन्य भी हैं। दर्शन मोहनीय की तीन प्रकृतिरूप यानी इन तीनों में जितना जितना विपरीत श्रद्धान अथवा यथार्थ श्रद्धान का अभाव है वह मोहकर्म-उदयजन्य है और जो सम्यक् श्रद्धान व विपरीत श्रद्धान का अभाव है वह मोहकर्म-विलय (क्षयोपशम आदि) जन्य है। यही कारण है कि मोहनीय कर्म की २८ प्रकृतियों, जो कि उदय रूप हैं, में भी इनका किसी रूप में उल्लेख है और मोहनीय कर्म की क्षयोपशमजन्य आठ उपलब्धियों में भी इनका उल्लेख है।

इसी प्रकार अज्ञान भी उदयभावजन्य और क्षयोपशमभावजन्य दोनों है। ज्ञानावरण कर्म के उदय के कारण ज्ञान-अभाव रूप जो अज्ञान है, वह उदयभावजन्य है और मिथ्यादृष्टि जीव का ज्ञान, जो कि मिथ्यात्व सहचारी होने के कारण अज्ञान कहलाता है, क्षायोपशमिक अज्ञान है। ज्ञान का हेतु ज्ञानावरण कर्म का विलय है। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान आदि उसके पांच प्रकार हैं। सम्यक् चारित्र का संबंध चारित्रावरणीय मोह कर्म के विलय से है। उसके सामायिक चारित्र, छेदोपस्थापनीय चारित्र आदि पांच प्रकार हैं एवं छठा प्रकार देशविरति है। 'सम्यक्' शब्द का अर्थ यथार्थ प्रशस्त अथवा संगत है।

ज्यों कोल्हू आदि के द्वारा तेल खलरहित होता है, मन्थनी के द्वारा घी छाछरहित होता है, अग्नि के द्वारा धातु मिट्टी रहित होती है, उसी प्रकार तप और संयम की साधना के द्वारा जीव का सर्वथा कर्मरहित होना मोक्ष है।

मोक्ष अवस्था को प्राप्त जीव मुक्त, सिद्ध, बुद्ध, परमात्मा, परमेश्वर आदि कहलाते हैं। वे संख्यात्रिरांत यानी अनंत होते हैं। एकस्वरूप और एकाकार होने के कारण उन्हें 'एक' भी कहा जा सकता है। गुणों की दृष्टि से वे एक समान होते हैं, उनमें उपाधि जनित कोई भेद नहीं होता। वे अभेद के परम उदाहरण हैं। पूर्व (जिस स्थिति से वे मोक्ष को प्राप्त हुए हैं) अवस्था के अनुसार उनके अनेक भेद हो सकते हैं, जैसे- स्त्रीलिंग सिद्ध, पुरुषलिंग सिद्ध, नपुंसकलिंग सिद्ध, स्व-(जैन मुनिवेश)-लिंग सिद्ध, अन्य (जैनेतर मुनिवेश)-लिंग सिद्ध, गृहलिंग सिद्ध, उत्कृष्ट अवगाहना वाले सिद्ध, मध्यम अवगाहना वाले सिद्ध, जघन्य अवगाहना वाले सिद्ध, ऊंचे लोक में मुक्त होने वाले सिद्ध, नीचे लोक में मुक्त होने वाले सिद्ध, तिरछे लोक में मुक्त होने वाले सिद्ध, समुद्र में मुक्त होने वाले सिद्ध, अन्य जलाशयों में मुक्त होने वाले सिद्ध आदि।

सर्वार्थसिद्ध विमान से बारह योजन ऊपर ईषत् प्राग्भारा नामक पृथ्वी है। वह छत्राकार में अवस्थित है। उसकी लम्बाई और चौड़ाई पैंतालीस लाख योजन की है। उसकी परिधि उस (लम्बाई-चौड़ाई) से तिगुनी है। मध्य भाग में उसकी मोटाई आठ योजन की है। वह क्रमशः पतली होती होती अंतिम भाग में मक्खी की पंख से भी अधिक पतली हो जाती है। वह श्वेत स्वर्णमयी, स्वभाव से निर्मल और उत्तान (सीधे) छत्राकार वाली है। उस 'सीता' नाम की ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी से एक योजन ऊपर लोक का अन्त (अग्रभाग) है। उस योजन के उपरिवर्ती कोस के छठे भाग में सिद्धों की अवस्थिति होती है। सिद्ध अनादि-अनन्त भी होते हैं और सादि-अनन्त भी होते हैं। 'अनादि' का यह अर्थ नहीं कि वे कभी संसारी थे ही नहीं, सदा सिद्ध ही थे। बहुत काल की अपेक्षा वे अनादि कहलाते हैं।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री भारीमालजी युग

मुनिश्री माणकचन्दजी (केलवा) दीक्षा क्रमांक : ७१

मुनिश्री ने अनेक तपस्याएं की। ऊपर में आछ के आधार पर चौमासी तप किया, जो गण में सर्वप्रथम था (मुनिश्री हीरजी और आपने साथ में किया था)।

– साभार: शासन समुद्र –

अप्रैल २०२४
सप्ताह के विशेष दिन

२ अप्रैल
भगवान ऋषभ जन्म कल्याणक (वर्षीतप प्रारंभ)

२ अप्रैल
आचार्यश्री माणकलाल जी पदाभिषेक दिवस

३ अप्रैल
भगवान ऋषभ दीक्षा कल्याणक

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स समाचार प्रेषकों से निवेदन

१. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।

२. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।

३. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।

४. समाचार केवल पीडीएफ फॉर्मेट में इस मेल एड्रेस **abtyptt@gmail.com** पर ही भेजें।

निवेदक
अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

तेरापंथ महिला मंडल के विविध आयोजन

जयपुर

'शासन गौरव' बहुश्रुत साध्वी कनकश्रीजी के सान्निध्य में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कैंसर को जीतने वाली महिलाओं को अणुविभा केन्द्र में सम्मानित किया गया। तेममं जयपुर द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में भगवान महावीर कैंसर हॉस्पिटल की वरिष्ट उपाध्यक्ष डॉ. श्रीमती अनिला कोठारी की विशेष उपस्थिति रही। इस अवसर पर साध्वी कनकश्रीजी ने सात्विक, संतुलित और तनाव मुक्त जीवन शैली और सकारात्मक सोच अपनाने की प्रेरणा दी।

तेममं जयपुर अध्यक्षा नीरू मेहता ने सभी का स्वागत किया। ५० से अधिक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय अवार्ड से सम्मनित डॉ अनिला कोठारी ने अपने वक्तव्य में अपने अभियान कैंसर जांच आपके द्वार की रूपरेखा व कार्यप्रणाली से परिचत कराया तथा सम्यक् उपचार व प्रबल आत्मशक्ति द्वारा कैंसर को हराने की प्रेरणा दी। डॉ प्रेमलता जी सांड ने कैंसर को मात देने वाले अनुभवों को बताते हुए कहा कि सकारात्मक सोच व दृढ़ संकल्प द्वारा सब कुछ संभव है।

कैंसर सरवाइवर डॉ. प्रेमलता सांड, लक्ष्मी शर्मा, चंद्रकांता बैद, शशि छल्लाणी, सुशीला सुराणा, प्रेम मेहता व जतन भण्डारी आदि बहनों का सम्मान किया गया। अभ्युदय योजना के अंतर्गत आत्मनिर्भर बनाने हेतु तीन बहनों- सुश्री हर्षा जैन, भाविका जैन व ज्योति जैन को सिलाई मशीन भेंट की गई। कार्यक्रम का संचालन गुलाब बोथरा व उषा बरड़िया ने किया।

नोखा

तेरापंथ भवन नोखा में 'शासन गौरव' साध्वी राजीमतीजी के सान्निध्य में एम्पावरमेंट सेलेब्रटिंग वूमनहुड का सफल आयोजन तेरापंथ महिला मंडल द्वारा किया गया। महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत से कार्यक्रम का आगाज किया।

बहिनों द्वारा नुक्कड़ नाटिका का सफल आयोजन किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष सुमन मरोठी ने स्वागत करते हुए अपने विचार रखे। कार्यक्रम का कुशल संचालन सीमा घीया ने किया। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा प्रेरणा सम्मान पुरस्कार चंचला देवी बैद को प्रदान किया गया। कार्यक्रम में ७० बहिनों की उपस्थिति रही।

सरदारपुरा

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में मेघराज तातेड़ भवन में आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी कमलप्रभा जी और साध्वी गुप्तिप्रभा जी के सान्निध्य में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र से किया तत्पश्चात महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। साध्वी मौलिकयशा जी ने नारी सशक्तिकरण विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष दिलखुश तातेड़ ने सबका स्वागत किया तथा कार्यक्रम में पधारे विशिष्ट अतिथि पार्षद मीनाक्षी कोठारी का साहित्य द्वारा सम्मान किया। साध्वी भावितयशा जी ने अपने मधुर स्वर में गीत की प्रस्तुति दी। महिला मंडल की बहनों ने बहुत ही सुंदर गीत की प्रस्तुति दी। चेतना घोड़ावत ने पधारे हुए अतिथिगण का परिचय दिया।

साध्वी गुप्तिप्रभा जी ने कहा कि महिलाएं जागृत तो हैं, दूसरों के प्रति सहयोग के लिए हमेशा तत्पर रहती हैं, पर वे अपने आध्यात्मिक लक्ष्य के प्रति कम जागरुक हैं। महिलाओं को जरूरत है कि वे अपने खुद के लिए भी चिंतन करें, तत्व ज्ञान आदि में अपनी रुचि बढ़ाएं। साध्वी कमलप्रभा जी ने कहा कि महिलाओं को अथक परिश्रम करते रहना चाहिए, परिश्रम के द्वारा ही वह सफलता की सीढ़ी पर चढ़ सकती है। सरिता कांकरिया तथा मौसमी तातेड़ ने मीनाक्षी कोठारी को प्रशस्ति पत्र भेंट किया। कार्यक्रम का सफल संचालन मंत्री चेतना घोड़ावत ने किया।

आमेट

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन में तेरापंथ महिला मंडल आमेट द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण से किया गया। मंडल अध्यक्ष संगीता पामेचा ने सभी बहनों का स्वागत किया तथा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर हार्दिक बधाइयां दी। आज के कार्यक्रम की मुख्य वक्ता तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम की सहमंत्री आयुषी हिंगड़ ने कहा कि नारी समाज का हृदय है। आज हर क्षेत्र में महिला पुरुषों के साथ खड़ी है, आर्थिक रूप से सुदृढ हो रही है। आज महिलाओं में जागृति की एक लहर दौड़ी है। महिलाओं को स्वाभिमान पूर्वक आनंद का जीवन जीना अवश्य सीखना होगा। हर महिला में अनंत शक्ति है वह अपना मनोबल मजबूत करे और अपनी शिक्षा और विवेक से कार्य करे तो परिवार, समाज और देश विकास की नई ऊंचाइयों को छू सकेगा। कन्या मंडल व महिला मंडल की बहनों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर बहुत सुंदर नाटिका की प्रस्तुति दी। मयूरी पितलिया ने प्रेरणा सम्मान पत्र का वाचन किया।

प्रेरणा सम्मान प्राप्तकर्ता स्वर्ण लता जैन १३ साल से तुलसी स्कूल में अपनी सेवाएं दे रही है। साध्वी सोमलता जी के देवलोक गमन पर महिला मंडल द्वारा चार लोगस्स का ध्यान किया गया। आभार ज्ञापन रेखा खाब्या ने किया व कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री हेमलता भंडारी ने किया।

पर्वत पाटीया

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल पर्वत पाटीया द्वारा तेरापंथ भवन के प्रांगण में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र द्वारा किया गया।

कार्यक्रम की मंगल शुरूआत महिला मंडल व कन्या मंडल की बहिनों द्वारा प्रेरणा गीत से की गई। अध्यक्षा रंजना कोठारी ने उपस्थित सभी का स्वागत करते हुए अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए कार्यक्रम के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किये। महिला मंडल की बहनों के द्वारा नुक्कड़ नाटिका का सुंदर आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि कनक बरमेचा ने कहा कि ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ महिला नहीं पहुंची हो। उन्होंने कहा कि महिलाओं को उड़ान तो भरनी है लेकिन अपने कदमों को धरातल से जोड़कर भी रखना है। पूर्व महामंत्री मधु जैन ने कहा कि आज का दिन महिलाओं के लिए स्वयं के अस्तित्व का दिन है। हमें हमारी ताकत को पहचानना है। सभा मंत्री व तेयुप अध्यक्ष ने नारी उत्थान विषय पर अपना व्यक्तव्य दिया। प्रेरणा सम्मान पत्र का वाचन वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुमन बैद ने किया। तेरापंथ महिला मंडल पर्वत पाटिया द्वारा प्रेरणा सम्मान डॉ. हर्षिता जैन, प्रीति सुराणा व मनीषा महनोत को प्रदान किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मधु झाबक व अंजु धाकड़ द्वारा किया। आभार ज्ञापन पूर्व अध्यक्ष मनोज गंग द्वारा किया गया।

शिवकाशी

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल शिवकाशी ने सामूहिक गोष्ठी का आयोजन डागा भवन में किया, जिसमें सभी बहनों ने सामूहिक सामायिक की। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। अध्यक्ष रानी बरड़िया ने प्रतिक्रमण के विषय में बहुत ही सरल तरीके से समझाया। शिवकाशी की वरिष्ठ श्राविका सम्पत डागा द्वारा रचित कविता की प्रस्तुति सभी बहिनों ने मिलकर दी। कविता में नारी के हर रुप की व्याख्या बहुत ही सुंदर तरीके से की गई है। आभार ज्ञापन मंत्री बेला कोठारी ने किया।

राजनगर

साध्वी विशदप्रज्ञा जी के सानिध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल राजनगर द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 'इंपावरमेंट सेलिब्रेटिंग वूमनहुड' कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम दो चरणों में हुआ।

प्रथम चरण में भिक्षु बोधि स्थल से रैली निकालकर नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया गया। दूसरे चरण में साध्वी विशदप्रज्ञा जी के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित हुआ। नमस्कार महामंत्र से कि कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी द्वारा या गया। महिला मंडल की बहिनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। मण्डल अध्यक्षा सुधा कोठारी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में सभी बहनों एवं मंचासीन अतिथियों का स्वागत कर सभी को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की शुभकामनाएं दी एवं अपने विचार व्यक्त किए। प्रेरणा सम्मान प्राप्तकर्ता का परिचय अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की सदस्या डॉ. नीना कावड़िया ने प्रस्तुत किया। महिला मंडल द्वारा इस सम्मान के लिए डॉ. सुमन बडोला का चयन किया गया। मंत्री चेष्टा धोका द्वारा प्रेरणा सम्मान पत्र का वाचन किया गया । राजसमन्द विधायक दीप्ति माहेश्वरी, अभातेममं सदस्या डॉ. नीना कावड़िया, महिला मंडल अध्यक्षा, मंत्री, संरक्षिका एवं परामर्शक गण द्वारा डॉ. सुमन बडोला को सम्मानित किया गया। जैन स्कॉलर एवं तत्व विज्ञ में विशेष योग्यता प्राप्त करने के लिए राजुल मादरेचा एवं शीला मादरेचा का अतिथियों द्वारा सम्मान किया गया।

साध्वी मन्दारप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज महिलाएं हर क्षेत्र में आगे हैं। डॉ. सुमन बडोला ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अपनों द्वारा जो सम्मान मिलता है वह एक बड़ी चुनौती है क्योंकि हमे उस पर खरा उतरना होता है।

साध्वी विशदप्रज्ञा ने कहा कि नारी के बिना सब अधूरा है। नारी में स्नेह का भंडार भरा होता है। महिला मंडल की बहनों द्वारा 'नारी एक : रूप अनेक' विषय पर नुक्कड़ नाटिका प्रस्तुत की गई। नुक्कड़ नाटिका के साथ ही प्रश्नमंच का भी आयोजन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन कार्यक्रम संयोजिका लता मादरेचा ने किया एवं आभार कार्यक्रम सहसंयोजिका मोनिका मादरेचा ने किया।

मदुरै

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में महिला मंडल द्वारा सिग्नेचर विला अपार्टमेंट में नारी सशक्तिकरण पर नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। नुक्कड़ नाटिका द्वारा महिलाओं के विविध पहलुओं को दर्शाया गया। महिलाएं भौतिक ही नहीं आध्यात्मिक क्षेत्र में भी आगे बढ़ रही है।

आज की नारी हर क्षेत्र में अपना परचम फैला रही है। घरेलू कामों से लेकर बच्चों के पोषण तक की सारी जिम्मेदारियां संभालती हैं। अध्यक्ष लता कोठारी ने नुक्कड़ नाटिका प्रस्तुत करने वाली बहिनों की प्रशंसा की। धन्यवाद ज्ञापन लता कोठारी ने किया। उक्त जानकारी मंत्री सुनीता कोठारी ने दी।

रक्तदान शिविर के विविध आयोजन

गंगाशहर

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान मे पूरे देश में वर्ष भर प्रतिदिन रक्तदान कैम्प आयोजित किए जाएंगे। मार्च माह में राजस्थान राज्य में लगने वाले कैम्प के अंतर्गत ७ मार्च को तेरापंथ युवक परिषद गंगाशहर द्वारा बीकानेर पीबीएम ब्लड बैंक में आयोजित रक्तदान शिविर में ३१ रक्त वीरों द्वारा रक्तदान किया गया। सर्वप्रथम पीबीएम ब्लड बैंक के डॉ. भारती व बीकानेर यूपीएस एंड बैटरी ट्रेड एसोसिएशन के अध्यक्ष गौतम मारू, मंत्री मयंकसिंह भाटी, उपाध्यक्ष राकेश मोदी आदि सदस्यों द्वारा शिविर का शुभारंभ किया गया। रक्तदान शिविर में रक्तदान करने वाले सभी रक्तवीरों को तेरापंथ युवक परिषद गंगाशहर व पीबीएम ब्लड बैंक द्वारा प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया। आभार ज्ञापन पीयूष लूणिया ने किया।

पीलीबंगा

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा एमबीडीडी आयाम के अंतर्गत एमबीडीडी रिदम् कार्यक्रम के तहत तेरापंथ युवक परिषद् पीलीबंगा द्वारा सरकारी अस्पताल के ब्लड बैंक की सहायता से ब्लड डोनेशन कैंप का आयोजन आत्म वल्लभ जैन भवन में किया गया। तेयूप, पीलीबंगा अध्यक्ष अंजन बोथरा ने बताया कि कैंप में ६५ यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। कैंप प्रभारी पंकज डाकलिया ने बताया कि सकल जैन समाज, स्थानीय तेरापंथी सभा, अणुव्रत समिति एवं महिला मंडल, व्यापार मंडल आदि सभी संस्थाओं का भरपूर सहयोग मिला। तेयुप मंत्री रूपेश सुराना ने बताया कि समणी संचितप्रज्ञा जी एवं समणी हर्षप्रज्ञा जी के मंगलपाठ के बाद राजकुमार बैद की माताजी ने फीता खोलकर कैंप का शुभारंभ किया। कैंप को सफल बनाने में सभी साथियों का योगदान रहा।

संक्षिप्त खबर

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर त्रिदिवसीय कैंप का आयोजन

राजराजेश्वरीनगर। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में तेरापंथ युवक परिषद राजराजेश्वरी नगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवं डेंटल केयर में हेल्थी वूमेन कैंप का आयोजन किया गया।

इस कैंप में सभी टेस्टिंग पर ५०% की छूट सिर्फ महिलाओं के लिए रखी गई। अध्यक्ष विकास छाजेड़ ने कहा कि महिला समाज का बहुत अहम एवं मजबूत हिस्सा है और अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं के लिए यह कैंप आयोजित किया गया है। इस कैंप में लगभग ८५ महिलाओं ने अपनी जांच करवाई। एटीडीसी प्रभारी नरेश बांठिया का कैंप आयोजन में पूर्ण सहयोग रहा।

एटीडीसी पूर्वांचल कोलकाता में अस्थि चिकित्सा शिविर

पूर्वांचल कोलकाता। डॉ. धीरज मरोठी के निर्देशन में सत्र २०२३-२४ के सातवें अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन एटीडीसी पूर्वांचल-कोलकाता में किया गया। कुल १४ व्यक्तियों ने इस शिविर में चिकित्सा का लाभ लिया। तेयुप पूर्वांचल- कोलकाता से एटीडीसी सलाहकार रवि दुगड़ ने इस शिविर में पूर्ण सहभागिता दर्ज कराई।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ **हावड़ा।** रतनगढ़ निवासी पूर्वांचल कोलकाता प्रवासी महेन्द्र कुमार जैन के पुत्र व पुत्रवधु गौरव-सुजाता जैन के सुपुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से सम्पादित हुआ। संस्कारक पवन कुमार बैंगाणी एवं गगन दीप बैद ने जैन मंत्रोच्चार के द्वारा कार्यक्रम संपादित करवाया।

■ **पूर्वांचल कोलकाता।** तेरापंथ युवक परिषद्, द्वारा राजलदेसर निवासी पूर्वांचल कोलकाता प्रवासी अमन बच्छावत (सुपुत्र धर्मेन्द्र कुमार बच्छावत - सरला बच्छावत) एवं पूजा बच्छावत के पुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से हुआ। जैन संस्कारक विजय कुमार बरमेचा ने बड़े ही सुंदर और पूर्ण मंत्रोच्चार से पूजन का कार्यक्रम संचालित किया और सभी को जैन संस्कार विधि के महत्व को समझाया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **अहमदाबाद।** तेरापंथ युवक परिषद्, अहमदाबाद की संस्कारक टीम द्वारा पारसमल कोठारी के सुपुत्र पंकज कोठारी के नए घर का गृह प्रवेश संस्कारक आनंद बोथरा एवं जागृत दुगड़ ने समवेत मांगलिक मंत्रोच्चार का संगान कर जैन संस्कार विधि से सानन्द संपन्न करवाया।

पाणिग्रहण संस्कार

■ **अहमदाबाद।** तेरापंथ युवक परिषद्, अहमदाबाद की संस्कारक टीम द्वारा आयुष्मती अलका सुपुत्री शांतिलाल ललवानी (बोराणा-अहमदाबाद) का शुभ विवाह आयुष्मान समरथ सुपुत्र स्व कन्हैयालाल कुमठ (थामला- नाथद्वारा) के साथ जैन संस्कार विधि से तेरापंथ भवन, शाहीबाग, अहमदाबाद में करवाया गया। संस्कारक नानालाल कोठारी, सज्जनलाल सिंघवी, पंकज डांगी एवं दीपक संचेती ने नवदम्पति को विविध संकल्पों से संकल्पित करवाते हुए विधिवत समवेत मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ विवाह विधि को संपादित किया।

अणुव्रत व्याख्यानमाला का आयोजन

चेन्नई/तिरुकल्लीकुण्ड्रम।

अणुव्रत समिति, चेन्नई द्वारा अणुव्रत आन्दोलन के ७५वें स्थापना वर्ष पर उद्घोषित अणुव्रत अमृत महोत्सव का सम्पूर्ति समारोह साध्वी डॉ गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में 'अणुव्रत व्याख्यानमाला' के अंतर्गत जैन भवन, तिरुकल्लीकुण्ड्रम में आयोजित किया गया।

साध्वी डॉ गवेषणाश्री ने व्याख्यानमाला में धर्म परिषद् को सम्बोधित करते हुए कहा कि अणुबम के युग में अणुव्रत व्यक्तित्व विकास का पायदान प्रस्तुत कर रहा है। अणुव्रत व्यक्ति के चरित्र निर्माण में सहभागी बनता है। आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आन्दोलन पर्यावरण को सुरक्षा प्रदान करता है। छोटे से बीज में वटवृक्ष बनने की क्षमता होती है, उसी तरह अणुव्रत के छोटे छोटे नियम स्वीकरण से व्यक्ति का स्वयं का विकास होता है और उससे समाज, देश और विश्व विकास की परिकल्पना साकार होती हैं।

साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा कि असली आजादी को अपनाने का नारा देते हुए समाज के सर्वोदय के लिए गुरुदेव श्री तुलसी ने आज से ७५ वर्ष पूर्व अणुव्रत का सूत्रपात किया। अणुव्रती बनने से जीवन में हिंसा का अवरोहण होता है और अहिंसा का ऊर्ध्वारोहण होता है। साध्वी मैरुप्रभा जी एवं साध्वी दक्षप्रभा जी ने गीतिकाओं की सुन्दर प्रस्तुति दी।

विशिष्ट अतिथि अणुव्रत लेखक पुरस्कार से सम्मानित, साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग ने कहा कि राष्ट्रीय निर्माण के लिए शिक्षा जरूरी है।

शिक्षा जगत में अणुव्रत के साथ जीवन विज्ञान के प्रयोगों से चारित्र निर्माण सम्भव है। अणुव्रत जीवन शैली से पर्यावरण संतुलन बना रह सकता है। अणुव्रत समिति प्रतिनिधि वक्ता गौतमचन्द सेठिया ने कहा कि अणुव्रत से मन और बुद्धि का संतुलन हो सकता है, संवेदनाओं का प्रसार होता है, करुणा का विकास होता है।

कार्यक्रम के शुभारम्भ से पहले शहर के मुख्य मार्गों व बाजार में अणुव्रत रैली निकाली गई। जिसमें अणुव्रत के उद्घोष उच्चारित किए गए। साध्वीश्री के नमस्कार महामंत्र समुच्चारण के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। अणुव्रत समिति चेन्नई एवं तिरुकल्लीकुण्ड्रम के श्रावक समाज ने अणुव्रत गीत संगान के साथ मंगलाचरण हुआ। सम्पतराज बडोला, अध्यक्ष तेरापंथ सभा, तिरुकल्लीकुण्ड्रम एवं ललित आंचलिया, अध्यक्ष अणुव्रत समिति चेन्नई ने स्वागत स्वर प्रस्तुत करते हुए अणुविभा द्वारा संचालित गतिविधियों का उल्लेख किया।

बाबुलाल खांटेड़, ताराचन्द बरलोटा ने अपने विचार व्यक्त किए। पंकज चौपड़ा एवं प्रशांत दुगड़ ने आभार व्यक्त किया। कुशल संचालन अणुव्रत समिति चेन्नई के मंत्री स्वरूप चन्द दाँती ने किया।

तेरापंथ महिला मंडल के विविध आयोजन

राउरकेला

तेरापंथ महिला मंडल द्वारा समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी, समणी करुणाप्रज्ञा जी एवं समणी सुमन प्रज्ञा जी के सान्निध्य में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। प्रेरणा गीत का संगान मंडल की बहिनों द्वारा किया गया। मंडल अध्यक्षा तरुलता जैन ने सभी बहनों का स्वागत करते हुए वूमेनट एंपावरमेंट पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मिसाल की एक मशाल सौ और को जगा सकती है। मंडल की बहिनों और कन्या मंडल द्वारा 'नारी एक रूप अनेक' विषय पर नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया गया। नाटक के माध्यम से बताया गया कि नारी अपने अनेक रूपों को निभाते-निभाते खुद को ना भूलें। शक्तिस्रोत, सहिष्णुता और संतुलन पर संपत भंसाली ने अपने विचार व्यक्त किए। कैंसर पर नेहा कोठारी ने सबको जागरूक किया और कहा कि साल में एक बार हमें पूरे शरीर का जांच जरूर करवाना चाहिए। रंजीता कोठारी को प्रेरणा सम्मान प्रदान किया गया।

समणी सुमन प्रज्ञा ने कहा कि नारी दुनिया की तकदीर है और तस्वीर है। हमारे धर्म संघ में प्रथम शासन माता का गौरवमयी पद प्राप्त करने वाली भी एक नारी ही है। समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी ने कहा कि दुनिया में तीन चीजें जरूरी होती हैं रोटी, पुस्तक और नारी। कार्यक्रम का आभार ज्ञापन नीतू कोठारी ने किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री कविता डागा और मीनाक्षी बोथरा ने किया।

गांधीनगर, बेंगलुरु

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल गांधीनगर बेंगलुरु के तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ बहनों द्वारा प्रेरणा गीत के संगान से हुआ। अध्यक्ष रिजु डूंगरवाल ने आए हुए सभी अतिथियों एवं मंडल की बहनों का स्वागत करते हुए अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर शुभकामना प्रेषित करते हुए अपने विचार रखें। मंडल की मंत्री ज्योति संचेती ने महिला दिवस की आवश्यकता पर अपने विचार रखते हुए कहा कि पहले नारी अपने कार्यों से पहचानी जाती थी। कुछ कारणों से नारी को सुरक्षा की आवश्यकता हुई, कब सुरक्षा रूढ़िवाद में परिवर्तित हो गई पता ही नहीं चला। हमें महिला दिवस की आवश्यकता है ताकि भीतर जो सोई हुई शक्तियां है जिससे हमारी पहचान थी, उसे जागृत करें ,समाज में मुकाम हासिल करें। करियर मंत्रा की संस्थापक मीनाक्षी जैन ने कहा कि नारी जीवन का आधार है। प्रशासनिक क्षेत्र से कविता पोरवाल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए अपने अनुभव साझा किए। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में तेरापंथ महिला मंडल ने नेशनल अवॉर्ड फॉर लाइफटाइम अचीवमेंट फॉर टीचिंग रिसर्च एंड पब्लिकेशन, डॉ एपीजे अब्दुल कलाम अवॉर्ड, द वर्ल्ड क्लास एजुकेटर अवार्ड प्राप्तकर्ता प्रोफेसर डॉक्टर अंजना गोपी को प्रेरणा सम्मान के द्वारा सम्मानित किया। डॉक्टर अंजना का परिचय पिंकी खाबिया ने दिया और प्रेरणा सम्मान पत्र का वाचन उपाध्यक्ष लता गादिया ने किया। डॉक्टर अंजना ने कहा महिलाएं अपने संकल्प बल को मजबूत करते हुए पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों क्षेत्रों में अपनी अमिट छाप छोड़ रही हैं। मंडल द्वारा शैक्षणिक क्षेत्र में स्कूलों में प्रशिक्षण दे रही बहिनों का सम्मान किया गया।

पार्श्वनाथ सिटी

आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी जिनबाला जी के सान्निध्य में पार्श्वनाथ सिटी में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। साध्वी जिनबाला जी ने महिला समाज को उद्बोधित करते हुये महिला शब्द के व्याख्यायित करते हुये अपने वक्तव्य में कहा कि पृथ्वी या चट्टान की भांति जो स्थिर रह सके वह महिला है। जो धैर्यवान हो, साहसी हो और जिसमें लज्जा का वास हो वह महिला है। साध्वी श्री ने अनेक उदाहरणों व प्रसंगों के माध्यम से महिला के महत्व को उजागर किया। साध्वी करूणाप्रभा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि महिला अपने समर्पण गुण से दो परिवारों को जोड़े रखने का महत्वपूर्ण कार्य करती है। साध्वी भव्यप्रभा जी ने सृजनशीलता को नारी का नैसर्गिक गुण बताते हुये उसकी व्याख्या की। वैभव भंडारी ने "मां के आंचल तले" गीत का सुंदर संगान किया। प्रवचन के पश्चात् जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकर भगवान पर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में ३० से अधिक प्रतिभागियों में प्रथम स्थान संगीता सुराणा, द्वितीय स्थान मनीष भागचंदानी व तृतीय स्थान संतोष देवी आर्या ने प्राप्त किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी प्राचीप्रभा जी ने किया।

अमराईवाड़ी

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार अमराईवाड़ी तेरापंथ महिला मंडल द्वारा 'सम्मान नारी के नारीत्व का : नारी एक रुप अनेक' कार्यशाला की गई। मुख्य वक्ता उपासिक संगीता सिंघवी ने कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के द्वारा की। कार्यक्रम को तीन चरण में आयोजित किया गया। इंटरनेशनल वूमेंस डे, रिश्ता ननद-भाभी का और प्रेरणा सम्मान समारोह।

अध्यक्ष लक्ष्मी सिसोदिया ने सभी बहनों का स्वागत किया और सभी को नारी के अनेक रूपों के बारे में समझाया। महिला दिवस के उपलक्ष में कविता, गीत और नाटक के माध्यम से प्रस्तुति दी गई। ज्योति डांगी को उनके शैक्षणिक योग्यता के लिए प्रेरणा सम्मान प्रदान किया गया। ज्योति डांगी ने अपने अनुभव एवं विचार व्यक्त किए। वंदना पगारिया ने सुंदर गीत प्रस्तुत किया। कार्यशाला में २७ बहनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। आभार ज्ञापन सुप्रिया मेहता ने किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री वंदना पगारिया ने किया।

हैदराबाद

तेरापंथ भवन हिमायत नगर में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर प्रेरणा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। प्रभावती जोन की बहिनों ने मंगलाचरण का संगान किया। अध्यक्ष कविता आच्छा ने सभी का स्वागत किया और कहा कि हमारा मनोबल ही हमें हर चीज में आगे बढ़ा सकता है। मंडल की संरक्षिका बहन पूर्व अध्यक्ष विमलेश सिंघी, सभा अध्यक्ष बाबूलाल बैद, अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश भंडारी व टीपीएफ की सहमंत्री वर्षा बैद ने महिला दिवस के उपलक्ष्य में अपनी-अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की। कार्यक्रम में बहुत ही रोचक तरीक़े से 'नारी एक रूप अनेक' विषय पर नुक्कड़ नाटिका प्रस्तुत की गई, जिसमें नारी के अनेक रूपों को दर्शाया गया। कार्यक्रम का संचालन नमिता सिंघी एवं हर्षलता दूधोडिया ने रोचक एवं नए तरीके से किया। अंत में मंत्री सुशीला मोदी ने सभी का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में लगभग १०० श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

बेलपाड़ा

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल, बेलपाड़ा द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर प्रेरणा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की हुई। तत्पश्चात मंडल की बहिनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष आशा जैन ने सभी बहनों व मेहमानों का स्वागत करते हुए नारी सशक्तिकरण विषय पर अपने विचार व्यक्त किये।

महिला मंडल मंत्री सीमा जैन ने बहुत ही मार्मिक विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन करते हुए लक्ष्मी जैन ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के इतिहास की जानकारी दी। कार्यक्रम में पधारे हुए मुख्य अतिथि मोनिका जैन का तेरापंथ महिला मंडल के द्वारा मोमेंटो से सम्मान किया गया। मुख्य अतिथि ने अपना वक्तव्य देते हुए अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की बधाइयां दी और इस विषय पर अपने भाव को रखा। ममता जैन और निर्मला जैन ने कविता के माध्यम से अपने विचार रखे। महिला मंडल की बहिनों ने महिला दिवस पर सुंदर ढंग से नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति दी, जिसका विषय था नारी एक रूप अनेक। कार्यक्रम का आभार ज्ञापन सुमन जैन ने किया।

अररिया

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार अररिया कोर्ट महिला महिला मंडल ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में नारी सशक्तिकरण, नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया। नुक्कड़ नाटक की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के द्वारा की गई। नारी सशक्तिकरण पर बहिनों ने प्रस्तुति देकर लोगों को आकर्षित किया। कार्यक्रम में संरक्षिका भीखी देवी घोषल, माला छाजेड़, आस्था बेगवानी, पूजा नाहटा, रितु चंडालिया, ज्योति बोथरा, अंजू बाठिया, श्वेता भूरा, प्रियंका बेगवानी, मंत्री सुरभि दुग्गड ने नारी सशक्तिकरण पर अपने-अपने विचार रखें। कार्यक्रम में सोनिया जैन को प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में यशा दुगड़ , समृद्धि बेगवानी, प्रांजल जैन, दिशा बेगवानी द्वारा 'नारी एक रूप अनेक' पर एक नाटिका प्रस्तुत की गई। आयोजन में बहिनों की सराहनीय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का सफल संचालन पूजा बेगवानी ने किया। महिला मंडल की अध्यक्षा सरिता बेगवानी ने आभार ज्ञापन करके बहनों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

तिरूपुर

अखिल भारतीय महिला मंडल द्वारा निर्देशित अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में तेरापंथ महिला मंडल तिरुपुर द्वारा रायपुरम क्षेत्र में 'श्रद्धा नहीं सम्मान चाहिए' विषय पर नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र द्वारा किया गया। अध्यक्षा नीता सिंघवी ने सभी का स्वागत किया। मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की कार्यसमिति सदस्य अनीता बरडिया ने कहा - आज हमारी बहनें नुक्कड़ पर खड़ी होकर इतनी सुंदर प्रस्तुति कर रही है, यह हमारी नारी सशक्तिकरण को बतलाता है। सभा अध्यक्ष अनिल आंचलिया एवं युवक परिषद अध्यक्ष सोनू डागा ने भी अपने विचार रखे, उन्होंने कहा परिवार की डोर नारी के ही हाथ में है अपनी योग्यता के आधार पर ही उसने हर क्षेत्र में अपना परचम लहराया है। सभा एवं युवक परिषद के भाइयों की भी उपस्थिति रही। कार्यक्रम में ललिता चिंडालिया, शोभा बैद, अलका बैद एवं प्रवीणा श्यामसुखा सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्री प्रीति भंडारी ने किया।

जीवन जीने की कला पर प्रवचन

अपने भीतर उज्जवलता एवं निर्मलता का विकास करें

सापटग्राम, असम।

मुनि प्रशांतकुमार जी एवं मुनि कुमुद कुमार जी के सान्निध्य में मां काली मंदिर में 'जीवन जीने की कला' पर प्रवचन आयोजित हुआ। जनसभा को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा असम में पहली बार आना हुआ।

हम अपने प्रवचन में जीवन जीने की सीख देते हैं। हमारा जीवन आदर्श बनें, जीवन की समस्या दूर हो और व्यक्ति सही रास्ते पर आगे बढ़े। सत्संगत से व्यक्ति की आदतों में, विचारों में परिवर्तन आता है। साधु-संतों की सन्निधि से जीवन में बहुत कुछ परिवर्तन आता है। व्यक्ति बहुत सारी बुराईयों से बच जाता है। आदमी को अच्छी जिंदगी जीना चाहिए। इस सर्वश्रेष्ठ जीवन को, बुद्धि को अच्छे कार्य में लगाएं तो व्यक्ति जीवन में बहुत कुछ अच्छा कर पाता है। नशा एवं मांसाहार इंसान के लिए अच्छा नहीं है। सभी प्राणियों को जीने का अधिकार है, हमें महान मनुष्य जन्म मिला है हम इसका सदुपयोग करें। मुनिश्री ने आगे कहा कि हमारी आत्मा में शीतलता आए, हमारे भीतर उज्जवलता एवं निर्मलता का विकास हो। नशा करना एवं गुस्सा करना दोनों ही जीवन के लिए हानिकारक है। महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लें। अपने मन, विचारों, आदतों पर अनुशासन करें तो जीवन जीने का आनन्द आ जाता है।

मुनि कुमुदकुमार जी ने कहा - जीवन को जीना कोई बड़ी बात नहीं है। जीवन को कैसे जीना यह कला हमें आनी चाहिए। हमारे जीवन व्यवहार में संयम, सादगी आ जाए। विचारों में उच्चता हो तो आचरण अपने आप प्रेरक बन जाता है। गुरुदेव श्री तुलसी ने नारा दिया - इंसान पहले इंसान, फिर हिंदू या मुसलमान। अहिंसा, सत्य, शाकाहार एवं नशामुक्ति का जीवन व्यक्ति को मानवतावादी जीवन-शैली की ओर ले जाता है।

जीवन में करुणा, दया, संयम का भाव बढ़ता है। हमारा स्वभाव अच्छा बनता है। व्यक्ति अपने लिए, परिवार एवं समाज के हित में कार्य करता रहे। धरती पर रहकर जीवन जीना आना बहुत जरुरी है तभी इस मनुष्य जीवन की सार्थकता है। कार्यक्रम का संचालन उदित लूणिया ने किया।

अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन

हावड़ा।

अणुविभा द्वारा निर्देशित अणुव्रत अमृत महोत्सव के समापन पर अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन अणुव्रत समिति हावड़ा द्वारा प्रतिष्ठित स्कूल हनुमान बालिका विद्यालय में किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत गीत के सामूहिक संगान से किया गया तत्पश्चात अणुव्रत अमृत महोत्सव कमिटी सदस्य रतनलाल दुगड़ ने सभी विद्यार्थियों को अणुव्रत आचार संहिता का वाचन कर संकल्पित कराया। कार्यक्रम में हनुमान बालिका विद्यालय की छात्राओं ने विभिन्न विषयों पर अपनी प्रस्तुति प्रस्तुत की। सभी छात्राओं को पारितोषिक भेंट कर प्रोत्साहित किया गया। रतनलाल दुगड़ द्वारा विद्यार्थियों को अणुव्रत पर विस्तार से समझाते हुए संयम दिवस के अंतर्गत प्रत्येक मंगलवार को मौन, शाकाहार एवम् नशामुक्त रहने के लिए संकल्पित भी कराया गया।

अणुव्रत समिति हावड़ा के अध्यक्ष दीपक नखत ने अपने भाव रखते हुए स्कूल प्रबंधन एवं पधारे सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के प्रभारी उम्मेद राखेचा, संयोजक सुनीता बैद ने अपना श्रम नियोजन कर कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री बीरेंद्र बोहरा ने किया।

समाधि केन्द्र में 'कैंसर जागरूकता अभियान'

बीदासर ।

युग प्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी कार्तिकयशाजी के सान्निध्य में कैंसर जागरूकता अभियान व मिलेट्स् के उपयोग एवं घरेलू नुस्खों द्वारा बीमारियों से बचाव कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरूआत मंगलाचरण से हुई जिसमें मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। मुख्य वक्ता डॉ सारिका गिड़िया ने बताया कि कैसे जागरूक रहकर, योग, ध्यान, व्यायाम करके एवं घरेलू नुस्खों द्वारा बीमारियों से लड़ा जा सकता है। पैकेट के खाने का सेवन बंद हो और शुद्ध खान-पान हो तो स्वस्थ रहा जा सकता है। किस मात्रा में कितना, कब व कैसे खाना चाहिए इसका ज्ञान आवश्यक है।

कैंसर जैसी महामारी बचने के उपायों की भी जानकारी दी गई। 'शासनश्री' साध्वी अमितप्रभाजी ने बताया कि भगवान महावीर कितने बड़े वैज्ञानिक थे जिन्होंने हजारों वर्ष पहले स्वस्थता के लिए आहार संयम की आवश्यकता बता दी थी। जैन धर्म में सोने और जागने के भी नियम है ताकि शरीर स्वस्थ बना रहे।

साध्वी कार्तिकयशा जी ने बताया कि शरीर धर्म साधना का साधन है। इसलिए स्वस्थ शरीर का होना अति आवश्यक है ताकि धार्मिक चेतना से जुड़ाव हो। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ महिला मंडल मंत्री भावना दूगड़ ने किया।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा

वर्ष 2024 हेतु नवीन घोषित चातुर्मास

मुनि जय कुमार जी : जैन विश्व भारती, लाडनूं
मुनि अनंत कुमार जी : भुज-कच्छ

अभिवंदना के स्वरों में एक स्वर आपका भी

युगप्रधान शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी के 50वें दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता पर करें अपने लेखन से अभिवंदना

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के

50वें दीक्षा कल्याण वर्ष की सम्पन्नता, 63वें जन्म दिवस, 15वें पदाभिषेक दिवस

के उपलक्ष में वंदनीय चारित्रात्माओं एवं पाठकगण की स्वरचित रचनाएं सादर आमंत्रित है।

- आप अपनी रचना आलेख (अधिकतम 300 शब्द) / कविता (अधिकतम 15 पंक्ति) / गीत (अधिकतम 5 पद्य/ 15 पंक्ति) / स्केच के रूप में भिजवा सकते हैं।
- कृपया एक व्यक्ति एक ही रचना भिजवाएं।
- आप अपनी रचना टाइप करवा कर या पीडीएफ फॉर्मेट में **15 अप्रैल 2024** तक **abtyptt@gmail.com** पर ईमेल करवा सकते हैं।
- प्रकाशन का सर्वाधिकार संपादक के पास सुरक्षित रहेगा।

:: निवेदक ::
अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002

ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

❖ वर्तमान में जीना सीखो। अनावश्यक अतीत की स्मृतियों में बहने व अनपेक्षित अनागत के आकाश में उड़ते रहने से वर्तमान चुपके से निकल जाता है।
-आचार्य श्री महाश्रमण

अणुव्रत अमृत महोत्सव सम्पूर्ति समारोह के विविध आयोजन

फारबिसगंज, बिहार

युगप्रधान महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य डॉ. मुनि ज्ञानेन्द्र कुमार जी ठाणा-2 एवं मुनि रमेश कुमार जी ठाणा-2 का आध्यात्मिक मिलन फारबिसगंज बिहार में हुआ। अणुव्रत समिति फारबिसगंज के तत्वावधान में अणुव्रत अमृत महोत्सव सम्पूर्ति समारोह का आयोजन हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि डीसीपी मुकेश कुमार शाह थे।

मुनि ज्ञानेन्द्र कुमार जी ने कहा- अणुव्रत सबके लिए है। अणुव्रत के नियम और दर्शन को समझना ही नहीं है इसे अपनी जीवन शैली बनाना है। विवेक चेतना को जागृत करके इसके जरिए स्वस्थ समाज का निर्माण संभव है। मुनि रमेश कुमार जी ने कहा- अणुव्रत एक असाम्प्रदायिक आन्दोलन है। जो मानव को मानवता से रहना सिखाता है। आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से नैतिकता का शंखनाद किया। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने प्रेक्षा ध्यान, जीवन विज्ञान के ऐसे अवदान दिये हैं जिससे देश और दुनिया को नई दिशा मिल रही है। मुनि सुबोध कुमार जी एवं मुनि रत्न कुमार जी ने भी अपने सारगर्भित भावों को प्रस्तुत किया।

समारोह के मुख्य अतिथि डीएसपी मुकेश कुमार शाह ने कहा- अणुव्रत को जीवन जीने का ध्येय बनाएं। प्रोफेसर अनिता झा ने कहा- शिक्षा के माध्यम से भारतीय संस्कृति और दर्शन का अध्ययन जरुर कराना चाहिए, तभी नैतिकता को अपनाया जा सकता है। अणुव्रत से चरित्र निर्माण किया जा सकता है। इससे पूर्व समारोह का शुभारंभ मुनि ज्ञानेन्द्र कुमार जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुआ। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष निर्मल मरोठी ने सभी अतिथियों का समाज की ओर से स्वागत किया। तेरापंथ महासभा के संवाहक अनूप बोथरा, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा सरिता सेठिया ने प्रासंगिक विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का आभार ज्ञापन बिन्दु डागा ने किया। अणुव्रत समिति की अध्यक्षा नीलम बोथरा ने समारोह का संचालन किया।

औरंगाबाद

अणुव्रत अमृत सम्पूर्ति समारोह कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण के साथ हुई। गौरव सेठिया ने मंगलाचरण किया। डॉ. अनिल नाहर ने मुख्य अतिथि मदनलाल आच्छा का सम्मान साहित्य भेंट कर किया। सुनीता कोटेचा, डॉ. अनिल नाहर, चेष्टा सुराणा ने जीवन में संयम का महत्व बताते हुए अपने विचार व्यक्त किए। सन्मति सेठिया ने कहा- आचार्यश्री तुलसी ने धर्म क्रांति का सिंहनाद कर, सोए हुए विश्व को जगाया। मुख्य अतिथि अणुव्रत समिति के परामर्शक मदनलाल आच्छा ने अपनी अभिव्यक्ति में कहा- आज से 75 वर्ष पूर्व हिंसा के कई ज्वलंत उदाहरण थे उस समय जनमानस को हिंसा मुक्त करने के लिए अणुव्रत की शुरुआत हुई। उन्होंने अन्य समाज के लोगों को अणुव्रत से जोड़ने एवं चुनाव शुद्धि अभियान में कार्य करने की प्रेरणा दी। अणुव्रत समिति अध्यक्षा रुपा धोका ने कहा- जब दुनिया अणुबम बना रही थी, तब आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया।

अणुव्रत जन -जन का है, जन -जन के लिए है। टीपीएफ अध्यक्ष डॉ. आनंद नाहर, तेरापंथ सभा के मंत्री आनंद दुग्गड, तेयुप अध्यक्ष अंकुर लूनिया ने अपनी अभिव्यक्ति से अणुव्रत के प्रचार-प्रसार हेतु आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति की मंत्री सुनीता सेठिया किया।

बेंगलुरु

अणुव्रत समिति, बेंगलुरु द्वारा अणुव्रत अमृत महोत्सव संपूर्ति समारोह के अंतर्गत अणुव्रत व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। केंगेरी सेटेलाइट टाउन स्थित ज्ञान बोधिनी स्कूल में लगभग ५०० विद्यार्थियों की उपस्थिति में नमस्कार महामंत्रोच्चार द्वारा अणुव्रत व्याख्यान माला का शुभारंभ हुआ। विद्यालय की प्रधानाध्यापिका जेन क्रस्ता ने अणुव्रत समिति के सभी सदस्यों का स्वागत करतें हुए अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट की जानकारी दी। समिति अध्यक्ष देवराज रायसोनी ने अणुव्रत गीतिका का संगान किया। मंत्री हरकचंद ओस्तवाल ने समिति की ओर से सभी का स्वागत वक्तव्य देते हुए अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स की पूरी जानकारी दी। मुख्य वक्ता चंद्रशेखरय्या ने अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी एवं अणुव्रत के नियमों की जानकारी से बच्चों को अवगत करवाया। गुरुदेव तुलसी पर आधारित चलचित्र बच्चों को दिखाया गया। उपाध्यक्ष मानकचंद संचेती ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में ललित डागा का सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन निवर्तमान अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल एवं आभार ज्ञापन सुमित्रा बरड़िया ने दिया।

शाहीबाग

शासनश्री साध्वी सरस्वतीश्री जी के सान्निध्य में अणुव्रत व्याख्यान माला, संयम दिवस का आयोजन तेरापंथ भवन शाहीबाग में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण भिक्षु भजन मण्डल के गायक छितरमल मेहता, मनोहर सोलंकी, नटवरलाल कोठारी द्वारा किया गया। साध्वीश्री ने कहा कि अणुव्रतों का सिल-सिला हमेशा से चला आ रहा है। जन-जन की जीवन शैली नैतिक हो, सुखद हो इसके लिए आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन चलाया। जिस तरह अमृत की एक बूँद जीवन का कायापलट कर देती है उसी तरह अणुव्रत के नियम व्यक्ति का जीवन सुधार सकते है। साध्वी संवेग प्रभा जी ने कहा कि व्यसन दुर्गति एवम् विनाश का कारण है। आज का व्यक्ति इन व्यसनों में फंसकर दुर्गति की तरफ जा रहा है, सारे गुण विलीन होते जा रहे हैं। साध्वी तरुणप्रभा जी ने अणुव्रत के नियमों को अपनाने की प्रेरणा दी। अध्यक्ष प्रकाश धींग ने सभी का स्वागत करते हुए वर्षभर में आयोजित कार्यक्रमों का उल्लेख किया। परामर्शक जवेरीलाल संकलेचा एवम् विमल बोरदिया ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में तेरापंथ महासभा के संरक्षक सज्जन सिंघवी एवम् स्थानीय सभा संस्थाओं के पदाधिकारी, अणुव्रत समिति पदाधिकारी, कार्यसमिति सदस्य एवम् श्रावक समाज की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री डिम्पल श्रीमाल और आभार ज्ञापन सहमंत्री विजय छाजेड ने किया।

जसोल

साध्वी रतिप्रभाजी के सान्निध्य में नवकार माध्यमिक विद्यालय, जसोल में नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से अणुव्रत अमृत महोत्सव कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मंगलाचरण अणुव्रत समिति एवं तेरापंथ महिला मंडल ने किया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। साध्वी मनोज्ञयशाजी ने जल प्रदूषण एवं साध्वी पावनयशाजी ने वायु प्रदूषण से हो रहे दुष्परिणामों का उल्लेख करते हुए इनसे बचने की प्रेरणा दी।

अणुव्रत विश्व भारती राष्ट्रीय सहमन्त्री ओमप्रकाश बांठिया, सहप्रभारी लीलादेवी सालेचा ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति के सदस्यों द्वारा ईको फ्रेंडली फेस्टिवल के बैनर का विमोचन किया गया। कार्यक्रम का आभार ज्ञापन अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष डिम्पल श्रीमाल ने किया एवं संचालन अणुव्रत समिति की उपाध्यक्ष रेखा डोसी ने किया।

कटक

अणुव्रत विश्व भारती समिति के तत्वावधान में अणुव्रत समिति कटक द्वारा अणुव्रत अमृत महोत्सव संपूर्ति समारोह के उपलक्ष्य में एक सेमिनार का आयोजन कीट यूनिवर्सिटी भुवनेश्वर में किया गया। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र का उच्चारण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रोफेसर सरबजीत सिंह, वाइस चांसलर कीट यूनिवर्सिटी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए अणुव्रत प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी को वंदन करते हुए उनके द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन एवं अणुव्रत जीवन शैली को मानव निर्माण एवं स्वस्थ समाज रचना का महत्वपूर्ण उपक्रम बताया। अपने स्वागत वक्तव्य में अध्यक्ष मुकेश डूंगरवाल ने इस कार्यक्रम में पधारे सभी अतिथियों एवं विद्यार्थियों का स्वागत अभिनंदन करते हुए अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष की संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की। कार्यक्रम की वक्ता मोटिवेशनल स्पीकर पूजा रितु बोथरा ने अपने प्रभावशाली वक्तव्य से अणुव्रत जीवन शैली के विभिन्न बिंदुओं पर प्रकाश डाला एवं जीवन में संकल्पों को स्वीकार कर अच्छे नागरिक बनने का आह्वान किया। विद्यार्थियों ने नशा मुक्ति का संकल्प भी स्वीकार किया। कार्यक्रम में कल्पना जैन एवं किरण बैंगनी के निर्देशन में महिला मंडल एवं ज्ञानशाला के बच्चों ने अणुव्रत के ११ नियमों पर प्रेरणादाई सुंदर नाटिका प्रस्तुत की। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के राष्ट्रीय प्रकल्प संस्कार निर्माण शिविर के संयोजक प्रफुल्ल जी बेताला एवं किट यूनिवर्सिटी की अध्यापिका डॉक्टर काजल पाराशर ने अपने विचार प्रस्तुत किए। आभार ज्ञापन संयोजिका ममता दूधोडिया ने किया।

अहमदाबाद

मुनि मुनिसुव्रत कुमार जी के सान्निध्य में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ उत्तर सभा मोटेरा अणुव्रत अमृत महोत्सव सम्पूर्ति समारोह का द्वितीय चरण आयोजित किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण कार्यसमिति सदस्य लक्ष्मीपत बोथरा ने किया। मुनि मुनिसुव्रतकुमार जी ने कहा कि अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों द्वारा व्यक्ति अपने जीवन को बदलने की दिशा में प्रयत्न करे तो जीवन में नैतिकता एवम् सद्भावना का विकास कर सकता है। मुनिश्री ने अणुव्रत आंदोलन प्रवर्तक आचार्य तुलसी के साथ किए गए अणुव्रत के कार्यक्रमों के कई संस्मरण सुनाए। मुनि शुभमकुमार जी ने अणुव्रत के नियमों को जीवन में उतारने की प्रेरणा दी। अध्यक्ष प्रकाश धींग ने अमृत महोत्सव वर्ष में आयोजित कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी। परामर्शक विमल बोरदिया ने अणुव्रत के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। उत्तर सभा के मंत्री सुनिल चौपड़ा ने अणुव्रत के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यसमिति सदस्य विनोद वडेरा ने आभार ज्ञापन किया।

दादर, मुंबई

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के सानिध्य में अणुव्रत अमृत महोत्सव सम्पूर्ति समारोह के शुभ अवसर पर अणुव्रत व्याख्यान माला, संयम दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों ने अणुव्रत गीत द्वारा किया। मुख्य वक्ता अणुव्रत सेवी प्रतिमा धारक प्रवक्ता उपासक डालचंद कोठारी ने जीवन में अणुव्रत अपनाने की प्रेरणा दी। अणुव्रत समिति मुंबई अध्यक्ष रोशन मेहता ने संयम दिवस की उपयोगिता बताते हुए हर मंगलवार को संयम दिवस के निर्धारित ३ नियम स्वीकार कर ऑनलाइन फ़ार्म भरने की प्रेरणा दी।

मुनि कमलकुमार जी ने छोटे-छोटे उदाहरणों के द्वारा अणुव्रत के नियमों को समझाया एवं जीवन को अणुव्रतमय बनाने की प्रेरणा दी। अष्टमाचार्य गुरुदेव कालूगणी के जन्मदिवस के पावन अवसर पर मुनिश्री ने कालूगणी की स्मृति में स्वरचित गीत का संगान किया। मुनिश्री ने आगे कहा कि पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा अणुव्रत यात्रा के माध्यम से अणुव्रत को जन-जन तक पहुंचाने के लिए नैतिकता, सद्भावना, एवं नशामुक्ति का संदेश दे रहे हैं। कार्यक्रम को सफल बनाने में अणुव्रत समिति मुंबई के कोषाध्यक्ष ख्यालीलाल कोठारी का विशेष श्रम रहा। कार्यक्रम का आभार ज्ञापन मंत्री राजेश चौधरी ने किया।

दुःख मुक्ति के लिए अपने आप का निग्रह करें : आचार्यश्री महाश्रमण

निजामपुर।
१४ मार्च, २०२४

अध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमणजी पुणे की ओर अग्रसर होते हुए निजामपुर पधारे। मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए परम पावन ने फरमाया कि जीवन में कई बार दुःख भी आ जाते हैं।

बीमारी, मृत्यु, जन्म, बुढ़ापा आदि दुःख के प्रसंग हो सकते हैं। आदमी दुःखों से छुटकारा पाना चाहता है, कि दुःख मुक्त जीवन हो, मैं सुखी बनूं। भारतीय साहित्य में मोक्ष की बात आती है वह तो परम सुख की स्थिति है। कई विशेष महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने विशेष साधना कर परम अवस्था-मोक्ष को प्राप्त कर लिया है।

हम जीवन में क्या करें और क्या न करें जिससे इस जीवन में भी अच्छे रह सकें और आगे भी अच्छा रह सके। एक सिद्धान्त है, पुनर्जन्मवाद का। इस जीवन से पहले भी हमारा जीवन था और जब तक मोक्ष नहीं होगा तब तक जन्म-मरण होता रहेगा। पूर्वजन्म व पुनर्जन्म का सिद्धान्त आध्यात्मिक शास्त्रों में मिलता है।

आत्मा एक शाश्वत तत्व है, शरीर तो विनाश धर्मा-अस्थायी है। बड़े से बड़ा और छोटे से छोटा जो भी दुनिया में जन्म लेता है, सबको अवसान को प्राप्त करना होता है। जब तक जीवन है, उसे अच्छे ढंग से अच्छा जीवन जीयें। यहां अच्छा आचरण करेंगे तो आगे भी अच्छे फल मिल सकते हैं।

कहा गया है कि दुःखों से मुक्ति के लिए अपने आपका निग्रह करो, संयम करो, आत्मानुशासन रखो। आज इतने शिक्षा संस्थान हैं, यहां जीवन विज्ञान से बच्चों में आत्मानुशासन व अच्छे संस्कार आ सकते हैं। बच्चों को बुरी बात कभी नहीं करनी चाहिये, किसी को धोखा नहीं देना चाहिये। किसी भी जीव को सताये नहीं। बच्चों के जीवन में भी अहिंसा के संस्कार आये। ज्ञान के साथ आचरण भी अच्छा हो। बच्चे संस्कारित होंगे तो समाज और देश भी अच्छा होगा। पूज्यप्रवर के स्वागत में निजामपुर विभाग शिक्षा प्रसारक मंडल के अध्यक्ष श्री दत्तूशेठ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

तेरापंथ टाइम्स ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

प्रतिस्रोत है संसार से उत्तरण का साधन : आचार्य श्री महाश्रमण

शब्द की ही तरह रूप, गंध, रस, स्पर्श आदि के प्रति भी राग-द्वेष न हो।

माणगांव।
१३ मार्च, २०२४

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी आज माणगांव पधारे। महातपस्वी ने मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि दो शब्द है- अनुस्रोत और प्रतिस्रोत। स्रोत या प्रवाह के साथ-साथ बहना आसान होता है और प्रवाह के अभीष्ट आगे बढ़ना मुश्किल हो सकता है।

भौतिकतावाद अनुस्रोत है, अध्यात्मिवाद प्रतिस्रोत है। भोग चेतना अनुस्रोत है तो योग चेतना प्रतिस्रोत है। आसक्ति अनुस्रोत है, विषय विरक्ति प्रतिस्रोत है। अनुस्रोत संसार है, प्रतिस्रोत संसार से उत्तरण का साधन है। जिसे कुछ बनना है, उसे अपने आप को प्रतिस्रोत में नियोजित कर देना चाहिये। पदार्थों के प्रति आसक्ति, भोग चेतना आदि इन्द्रिय विषयों के प्रति जो आकर्षण है वह सारा अनुस्रोत है और इन्द्रिय विजय की साधना प्रतिस्रोत की चीज है। मनोज्ञ शब्द से राग और अमनोज्ञ शब्द से द्वेष भाव हो सकता है। राग-द्वेष का संसार अनुस्रोत का संसार है, हम समता में रहने का प्रयास करें।

शब्द की ही तरह रूप, गंध, रस, स्पर्श आदि के प्रति भी राग-द्वेष न हो। न स्वाद में आसक्त होना चाहिए, न विवाद में अनुरक्त होना चाहिए। थोड़ी सी आसक्ति कठिनाई बन सकती है। भोजन के प्रति भी अनासक्ति का भाव रहे। उम्र के अनुसार जीवन शैली में आवश्यकता अनुसार बदलाव करते रहे। धार्मिक साधना में भी समय लगायें, परवश न बनें, आदमी स्वावलंबी रहे। गृहस्थ जीवन में व्यवहार भी निभाना पड़ता है। व्यवहार से निश्चय की ओर, आत्मा की ओर प्रयाण हो।

स्पर्श के प्रति भी आसक्ति न हो, समता का भाव रहे। साधु को तो समतावान होना ही चाहिये। गृहस्थ भी समता भाव में, शांति में रहने का प्रयास करें। समता धर्म है, समता में सुख है। प्रतिस्रोत की दिशा, संसार मुक्ति की दिशा, अध्यात्म की साधना में आगे बढ़ने का प्रयास करते रहे।

पूज्यप्रवर के स्वागत में अस्मिता गांधी, रमेश बंब, अशोक बंब, लादुलाल गांधी, संध्या दलाल, रीना पिछोलिया, बाबुलाल बाफना ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष एवं अणुव्रत यात्रा के संपन्नता की हुई घोषणा

समस्याओं की अवांछनीय वर्षा से सुरक्षा कर सकता है अणुव्रत का छत्र : आचार्यश्री महाश्रमण

लोणेर।
१२ मार्च, २०२४

फाल्गुन शुक्ला द्वितीया, वि. सं. २००५ के दिन आचार्य श्री तुलसी ने सरदारशहर में अणुव्रत आन्दोलन का आगाज किया था। आज अणुव्रत आंदोलन अपने ७५ वर्ष पूर्ण कर ७६वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। अणुव्रत अमृत महोत्सव के त्रिदिवसीय सम्पूर्ति महोत्सव के तृतीय एवं मुख्य दिवस का कार्यक्रम अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में पूज्यप्रवर के मुखारविंद से कोंकण क्षेत्र के लोणेर ग्राम में मंगल मंत्रोच्चार एवं अणुव्रत गीत के संगान के साथ प्रारंभ हुआ।

परम पावन आचार्य प्रवर ने अपने प्रेरणा पाथेय में फरमाया कि प्राणों का अतिपात नहीं करना, हिंसा नहीं करना, यह अहिंसा धर्म है। साधु का अहिंसा धर्म सर्वप्राणातिपात विरमण महाव्रत के रूप में होता है। गृहस्थ के लिए यह स्थूल प्राणातिपात विरमण के रूप में होता है। साधु का धर्म महाव्रत का धर्म है, गृहस्थ उतना न कर पाए, उसके लिए अणुव्रत का मार्ग होता है।

अणुव्रत का अस्तित्व प्राचीन काल से है, भगवान महावीर और जैन शासन से जुड़ा हुआ है। आचार्य भिक्षु ने एक चिंतन, दर्शन दिया था कि एक मिथ्यात्वी व्यक्ति है, अन्य धर्मावलंबी है, वह अच्छा काम करे, त्याग- तपस्या करे तो वह भी धर्म है। अभवी भी कोई त्याग- तपस्या करता है तो उसे भी धर्म हो सकता है। केवल जैन धर्म के अनुयायी ही नहीं, किसी भी धर्म के लोग, कोई त्याग-तपस्या करें उन्हें धर्म का फल मिल सकता है। यह आचार्य भिक्षु का 'मिथ्यात्वी की करणी' का यह एक सिद्धांत रहा है, कि वो भी एक आराधिका है। गुरुदेव श्री तुलसी ने अणुव्रत को एक व्यापक रूप दिया कि कोई भी अणुव्रत को स्वीकार कर सकता है, संभव है कि उसमें आचार्य भिक्षु का 'मिथ्यात्वी की करणी' का सिद्धांत आधार के रूप में रहा होगा।

गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत का शुभारंभ फाल्गुन शुक्ला दूज, परम पूज्य कालूगणी के जन्म दिवस के दिन सरदारशहर में किया था। परम पूज्य कालूगणी, अणुव्रत आंदोलन और पारमार्थिक शिक्षण संस्था का भी जन्म दिवस आज ही है। आदर्श साहित्य संघ था, उसका भी स्थापना दिवस आज का दिन है। आज दूज भी है, तीज भी है। कहा गया है कि 'अणपूछा मुहूरत भला, का तेरस का तीज।'

आचार्य श्री तुलसी ने युवा अवस्था में अणुव्रत का शुभारंभ किया। अणुव्रत के प्रचार-प्रसार में चारित्रात्माओं, समणियों, गृहस्थ कार्यकर्ताओं आदि अनेकों का योगदान रहा है, श्रम नियोजन हुआ है। अणुव्रत एक ऐसा छत्र है जो समस्याओं की अवांछनीय वर्षा से आदमी की सुरक्षा कर सकता है। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी अनेक गतिविधियों वाली संस्था है। अणुव्रत न्यास भी अणुव्रत की गतिविधियों में योगदान देता रहे। अणुव्रत का कार्य बढ़ता रहे। अणुव्रत अमृत महोत्सव संपन्नता के निकट है। ७५वें वर्ष की संपन्नता के बाद आगे शताब्दी वर्ष की भी बात है। सन् १९९९ में पूज्य आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के सान्निध्य में अध्यात्म साधना केंद्र दिल्ली के सामने के स्थान में अणुव्रत के ५०वर्षों की संपन्नता के अवसर पर मैंने भी शताब्दी समारोह की कल्पना के संदर्भ में भाषण दिया था। उसमें मैंने कुछ विचार रखे थे, उनको भी शताब्दी के संदर्भ में सुना जा सकता है।

आचार्य प्रवर ने खड़े होकर ठीक ११:०१ बजे एक वर्ष पूर्व घोषित अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष एवं अणुव्रत यात्रा दोनों की संपन्नता की घोषणा की। परम पावन आचार्य प्रवर के पावन पाथेय से पूर्व साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जबसे परम पूज्य आचार्यवर ने अणुव्रत वर्ष एवं अणुव्रत यात्रा की घोषणा की है, तब से ऐसा लगता है कि अणुव्रत की गूंज हो रही है। गूंज तब होती है जब कोई प्रासंगिक होता है। (शेष पृष्ठ २ पर)

अणुव्रत यात्रा : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक - **दिनेश मरोठी**